आवास भारती

वर्ष 7, अंक 24
जुलाई- सितम्बर, 2007

राष्ट्रीय
आवास बैंक

विश्व पर्यावास दिवस, 2007 के उपलक्ष्य में निबंध प्रतियोगिता

विश्व पर्यावास दिवस समारोह के एक भाग के रूप में, राष्ट्रीय आवास बैंक एक निबंध प्रतियोगिता आयोजित कर रहा है। निबंध के विषय हैं :-

क. वास्तविक नियोजन और पर्यावरणीय अभिकल्प के माध्यम से सुरक्षित नगर।

ख. ग़रीबों के लिए आवासीय सुरक्षा।

ग. सुरक्षित नगरों के लिए आवास वित्त में अभिनवकारी और रचनात्मक दृष्टिकोण।

प्रतिभागीगण कोई एक विषय चुन सकते हैं। निबंध अंग्रेज़ी अथवा हिंदी में लिखा जा सकता है और यह 5000 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

ग्राह्यता

यह प्रतियोगिता भारतीय रिज़र्व बैंक, अखिल भारतीय स्तर के वित्तीय संस्थानों, वाणिज्यिक बैंकों और राष्ट्रीय आवास बैंक में पंजीकृत आवास वित्त कंपनियों में कार्यरत सभी कर्मचारियों के लिए खुली है।

प्रविष्ठियां

प्रविष्टियां प्राप्त करने की अंतिम तारीख 31 जनवरी, 2008 है। ए-4 आकार के कागज़ पर लिखी निबंध की दो प्रतियां एक लिफाफे, जिस पर "विश्व पर्यावास दिवस निबंध प्रतियोगिता" लिखा हो, में निम्नलिखित पते पर भेजी जानी चाहिएं:-

श्री. पी.के. कौल,
महाप्रबंधक,
राष्ट्रीय आवास बैंक,
कोर: 5ए, चतुर्थ तल,

पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार	-	20,000/-
द्वितीय पुरस्कार	-	15,000/-
तृतीय पुरस्कार	-	10,000/-
सांत्वना पुरस्कार (3)	-	5,000/-

इसके अतिरिक्त, विजेताओं को प्रमाण-पत्र भी दिए जाएंगे और राष्ट्रीय आवास बैंक आगामी पर्यावास दिवस पर प्रकाशित किए जाने वाले प्रकाशन में पुरस्कार पाने वाले निबंध मुद्रित करेगा।

अन्य नियम एवं शर्तें

i. प्रविष्टि मूल होनी चाहिए तथा इससे पहले प्रकाशित न की गई हो। **प्रतियोगी को प्रविष्टि के साथ इस दिशा में एक घोषणा प्रस्तुत करनी होगी।**

ii. 31 जनवरी, 2008 के पश्चात् प्राप्त हुई प्रविष्टियों पर विचार नहीं किया जाएगा।

iii. अन्य स्रोतों से सभी संदर्भ और सामग्री विधिवत् रूप से स्वीकृति प्राप्त होनी चाहिए।

iv. प्रतिभागियों को अपना नाम नहीं लिखना चाहिए अथवा प्रविष्टि के किसी भी पृष्ठ पर अपने हस्ताक्षर नहीं करने चाहिएं।

v. प्रतिभागियों को आवरण-पत्र में अपना पूरा पता और संपर्क सूत्र, ई-मेल आईडी देना चाहिए।

vi. प्रविष्टियों की जांच राष्ट्रीय आवास बैंक की ओर से नियुक्त निर्णायकों का एक स्वतंत्र दल करेगा और उनका निर्णय अंतिम रूप से मान्य होगा।

vii. एक ही निबंध को कोई एक अथवा अधिक व्यक्ति संयुक्त रूप से लिख सकते हैं।

परिणामों की घोषणा

उनके संबंधित संस्थानों के माध्यम से सूचित करने के अतिरिक्त, राष्ट्रीय आवास बैंक पुरस्कार विजेताओं को व्यक्तिगत रूप से भी सूचित करेगा। पुरस्कार आगामी विश्व पर्यावास दिवस समारोह, 2008 में वितरित किए जाएंगे। बाहर के सभी पुरस्कार विजेताओं को बैंक के नियमानुसार यात्रा भत्ता/मंहगाई भत्ता दिया जाएगा जिससे कि वे समारोह स्थल पर व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर अपना पुरस्कार ग्रहण कर सकें।

आवास भारती

वर्ष 7, अंक-24, जुलाई-सितम्बर, 2007

राष्ट्रीय आवास बैंक की राजभाषा पत्रिका

(केवल आंतरिक परिचालन हेतु)

पंजी. संख्या : दिल्ली इन/2001/6138

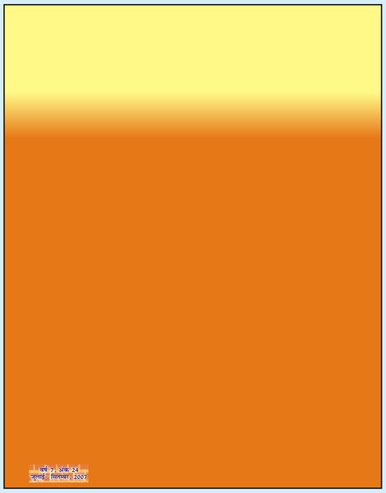

प्रधान संरक्षक

एस. श्रीधर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक

सुरेन्द्र कुमार, कार्यपालक निदेशक

संयुक्त संरक्षक

पी. के. कौल, महाप्रबंधक

संपादक

ओ. पी. पुरी, सहायक महाप्रबंधक

उप संपादक

रंजन कुमार बरुन, प्रबंधक

संपादक मंडल

मि.गो. देशपाण्डे, प्रबंधक-मुम्बई कार्यालय से
किशोर कुंभारे, प्रबंधक
पूनम चौरसिया, उप प्रबंधक
ऋतु शर्मा, सहायक प्रबंधक

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचार, मौलिकता एवं तथ्य आदि लेखकों के अपने हैं। संपादक या बैंक का इनके लिए जिम्मेदार अथवा सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

विषय सूची

विषय	पृष्ठ सं.
उप संपादक की कलम से	2
घर की सफेदी	3
भारत में आवास की समस्या एवं समाधान	5
भूसम्पदा के क्षेत्र में भारत की धूम	6
बाली यात्रा के कुछ संस्मरण	10
मेरी यादें	14
भारत के प्रदेश राजस्थान	16
कविता और हम	18
यज्ञ की महिमा	20
काव्य सुधा	21
राष्ट्रीय आवास बैंक के राजभाषा नीति कार्यान्वयन के क्षेत्र में बढ़ते कदम	22
राष्ट्रीय आवास बैंक परिवार समाचार	23
आपकी पाती	24

उप संपादक की कलम से

बैंक में पिछले कई वर्षों की तरह इस वर्ष भी हिंदी चेतना मास मनाया गया एवं 6 हिंदी प्रतियोगिताएं, हिंदी संगोष्ठी, हिंदी वृत्तचित्रों का प्रदर्शन इस अवसर पर किया गया।

मेरा हमेशा से यह मानना रहा है कि आजादी के इतने वर्षों के बाद भी सरकारी उपक्रमों में विशेष रूप से बैंकों में हिंदी का प्रयोग सबसे ज्यादा सशक्त रूप से हुआ है। शायद इसका एक कारण बैंकों का आम जनता से ज्यादा संपर्क होता है एवं हाल ही में वित्तीय समावेशन यानि फार्नेशियल इन्क्लूशन के दौर में हिंदी का वर्चस्व फिर स्थापित होगा क्योंकि वित्तीय समावेशन में आम जनता को बैंकिंग की सुविधाओं के दायरे में लाना है एवं जनता के इस वर्ग से जनता की भाषा में ही बैंकों को बात करनी होगी अन्यथा मिशन ही असफल हो जाएगा।

धीरे-धीरे हिंदी के कदम मजबूत हो रहे हैं एवं बैंकों एवं अन्य सरकारी संगठनों में हिंदी एक नये आयाम लेकर उभर रही है। एक आम कर्मी की बात करें तो पुरानी चली आ रही अंग्रेजी रूढिवादिता जो सरकारी नोटों या पत्रों में दिखाई देती है अगर उसे हिंदी में परिवर्तन कर दिया जाए तो आगे आनेवाला कर्मी भी उसी का अनुकरण करेगा।

इस बार मनाए गए हिंदी चेतना मास एक एक प्रमुख आकर्षण प्रमुख हास्य व्यंग्य कवियत्रि डा. सरोजिनी प्रीतम की उपस्थिति थी जिन्होंने अपने उद्‌बोधन से सभी का मन मोह लिया। अधिकारियों द्वारा समारोह में पूरे जोश से भाग लिया गया एवं मुख्य समारोह में अध्यक्ष एवं कार्यपालक निदेशक महोदय ने अपने वक्तव्य में सभी अधिकारियों को हिंदी के मौलिक काम को बढ़ाने के लिए पुरजोर आह्वान किया।

बैंक में हमारा शुरू से यही प्रयास रहा है कि राजभाषा विभाग अपने अधिकारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए सशक्त करें एवं हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करें जिससे वे राजभाषा विभाग की सहायता से काम ना करें बल्कि अपना काम स्वयं करें जिससे हिंदी के प्रति एक स्वस्थ वातावरण का विकास हो और शायद इसी का परिणाम है कि हिंदी रूप वृक्ष लगातार सुदृढ़ हो रहा है एवं इसकी जड़ें पैठ बना रही हैं।

रंजन कुमार
उप-संपादक

घर की सफेदी

(अपनी जिंदगी को रंगीन बनाइये)

–राकेश कुमार चुग
पूर्व सहायक महाप्रबंधक

क्या आप अपने घर को वैसा ही नीरस और बदरंग देखते–देखते ऊब चुके हैं और उसमें कुछ नया करने का सोच रहे हैं। आपका घर नया और सुन्दर दिखे, इसका एक सरल उपाय घर की रंगाई कराना है। घर की दीवारों, छत और उसमें रखे फर्नीचर आदि पर अगर ठीक से रंग–रोगन (पेंट) कर दिया जाए, तब आपका घर एक दम नया दिखने लगेगा।

किंतु रंग–रोगन (पेंटिंग) का काम एक बड़े पहाड़ जैसा काम है– जैसे कि परिवार में कोई शादी इत्यादि हो। आपको घर के मेहमानों, बच्चों की परीक्षाओं से फुर्सत मिलने, घर के फर्नीचर के इधर–उधर बिखरने और घर के सारे सामान ऊपर नीचे होने की कठिनाईयों के डर से रंग–रोगन (पेंट) का काम कराना वास्तव में एक मुसीबत लगता है। इस लेख में दी गई जानकारी आपके लिए उस समय बड़ी उपयोगी सिद्ध होगी जब आप अगली बार अपने मकान में सफेदी, रंग रोगन कराएंगे।

वास्तव में, आपको यह जानकारी होनी चाहिए। बिना सोचे समझे कोई पेंटर रखने से आप उसके हाथों भारी धोखा खा सकते हैं। अत: पेंटर चुनते समय आपको सावधानी से काम लेना चाहिए। वस्तुत: कुछ पेंटरों से पेंट के खर्च का अनुमान ले लेना हमेशा अच्छा रहता है। इसके साथ ही उनके पूरे किए गए कामों को भी देखना अच्छा रहता है। एक अनुभवी पेंटर, जो एक अच्छा कारीगर भी हो, वह आपके कठिन कार्य को काफी सरल बना देता है।

कितना पेंट खरीदें?

रंग–रोगन (पेंट) की मात्रा का अनुमान लगाने के लिए आपको दीवारों और छत, जिस पर रंग–रोगन (पेंट) किया जाना है, का क्षेत्र मालूम करना पड़ेगा। पेंट की जाने वाली प्रत्येक दीवार का क्षेत्र और छत का क्षेत्र जोड़कर उसमें से दीवार का वह क्षेत्र जिस पर रंग रोगन नहीं होना है, निकाल लें। इसी तरह खिड़कियों और निर्मित अलमारियों को भी दीवारें के क्षेत्रफल में से लिया जाता है। इस प्रकार वह क्षेत्रफल निकल आएगा जिस पर रंग–रोगन (पेंट) करना है।

नीचे दी गई तालिका से आप यह जान सकते हैं कि आपके मकान में कितना रंग–रोगन (पेंट) का सामान लगेगा।

	घर के अंदर के रंगाई के काम	प्रति लीटर वर्गफीट कितना पेंट किया जा सकता है?
1.	दीवारों पर डिस्टेंपर	100–110
2.	लकड़ी/धातु पर इनेमल	75–80
3.	लकड़ी को चमक देने वाली पॉलिश मेलेमाइन/पॉलीयूरीथिन फिनिश	40–50
4.	घर के बाहर के रंगाई के काम	
	(i) बनी हुई वस्तुओं पर पेंट	40–45
	(ii) सीमेंट टेक्सचर्ड पेंट	25–30

रंग–रोगन किए जाने वाले स्थान को जान लेने का एक अन्य तरीका है। फर्श के नाप को पांच से गुण कर लेना। इससे छत समेत रंग–रोगन किया जाने वाला कुल क्षेत्र का अनुमान निकल आता है।

प्रत्येक पेंट में रंगने की एक निश्चित क्षमता होती है जिसका सीधा सा अर्थ यह होता है कि एक लीटर पेंट में कितने वर्गफीट अथवा वर्गमीटर सतह को पूरा किया जा सकता है।

पेंट करने की प्रक्रिया

पेंट करने की प्रक्रिया थोड़ी बहुत लगाये जाने वाले पेंट की किस्म और पेंट किए जाने वाले धरातल के अनुसार अलग–अलग होती है। पेंट बनाने वाली कंपनियों के अधिकांश शेड कार्डों और सूचीपत्रों में यह अनुदेश दिए होते हैं। पेंट करने में प्रारम्भिक कदम इस प्रकार से हैं।

सतह/धरातल को साफ करना तथा घिसना

यह इसलिए किया जाता है जिससे यथासंभव साफ और सुथरा हो जाये। विभिन्न धरातलों की अपनी–अपनी की जरूरतें होती हैं जैसे किसी भीतरी दीवार पर पहली बार पेंट किया जाना होता है, तब चूने के घोल के एक कोट के बाद इसे सूखने दिया जाना चाहिए जिससे नीचे दीवार का पलस्तर पूरी तरह सूख जाये। तब रेगमाल से ऊपरी पपड़ी उतार दें और धूल, मिट्टी साफ कर देना चाहिए।

यदि दीवार पर दोबारा पेंट किया जा रहा है और पहला कोट चूने के घोल अथवा पाउडर डिस्टेंपर का था, तब उसे पूरी तरह खुरच कर साफ कर दें। यदि यह ऑयल पेंट था और अच्छी हालत में हैं, तब रेगमार से उसकी चमक उतार दें। यदि लकड़ी पर पेंट कर रहे हों, तब यह सुनिश्चित करें कि धरातल की धूल साफ कर दी गई है और उसे साफ-सुथरा बना दिया गया है। धातु की चीजों पर से तेल चिकनाई के दाग-धब्बे हटा कर पेंट करना चाहिए। पेंट करने से पहले उनमें नमी न हो और वे सूखी हों।

पहला प्राइमर कोट : पहला प्राइमर कोट पेंट को धरातल पर अच्छी तरह चिपकने में मदद करने के लिए किया जाता है। यह धरातल को चिकना बनाता है और पेंट की फैलाने की क्षमता को बढ़ाता है। दीवारों, लकड़ी और धातु की चीजों पर पेंट के लिए विशेष प्राइमर उपलब्ध हैं।

पुट्टी का प्रयोग : यह दरारों को भरने और धरातल को एकसार करने के लिए किया जाता है।

द्वितीय प्राइमर कोट : इसे पुट्टी को 2 प्राइमर कोटों के बीच रखने के लिए किया जाता है क्योंकि पुट्टी पर सीधे पेंट करने से धब्बे दिखने लगते हैं।

परिसज्जा कोट करना: पेंट का प्रयोग रद्दों अथवा कोटों में किया जा सकता है। सामान्यतया अच्छा रंग और परिसज्जा के लिए 2 कोट अवश्य किए जाने चाहिए। अगला कोट किया जाने से पहले, निचले कोट को अच्छी तरह से सुखा लेना चाहिए। परिसज्जा के लिए अगर तीसरे कोट की जरूरत हो तो कर लेना चाहिए।

कुछ आवश्यक परामर्श :

- पेंट करने से पूर्व, धरातल की वर्तमान समस्याओं-जैसे कि गड्ढे, दरार आदि को दूर कर लेना चाहिए।
- थिनर, प्राइमर और अंडरकोट इत्यादि सामग्री अच्छी गुणवत्ता की होनी चाहिए। यद्यपि, अधिकांश पेंटर घटिया क्वालिटी की सलाह देंगे, तथापि, आप इन्हें प्रमुख पेंट ब्रांडों का ही खरीदने पर जोर डालें। ये परिसज्जित धरातल को सुन्दर बनाते हैं।
- यह सुनिश्चित करें कि पेंट करने से पूर्व धरातल की धूल, मिट्टी और अन्य कणों की सफाई कर दी गई है।
- तार के ब्रुश और रेगमार से धातु की चीजों पर लगे जंग को हटा देना चाहिए।
- प्रयोग से पहले पेंट को पूरी तरह मिला देना चाहिए। कुछ पेंट पेंदी में जमे रह जाते हैं। पेंट को अच्छी तरह प्रयोग करने के लिए पूरी तरह से हिलाना चाहिए जिससे कि पेंट एकसार रहे।
- जहां तक संभव हो, बने बनाए शेड्स (रंग) खरीदें। पेंटरों द्वारा मिक्स करके बनाये गये रंगों के शेड अलग-अलग दीवारों पर अलग-अलग शेड और रंग दे जाते हैं।
- गीली सतह पर पेंट नहीं करना चाहिए। बरसातों के दिनों में भी पेंट करने से बचना चाहिए क्योंकि पेंट इन दिनों में पूरी तरह सूख नहीं पाता।
- खिड़की के शीशे के आसपास साफ-सुथरे पेंट की गारंटी के लिए शीशे को पेंट शील्ड से संरक्षित रखें अथवा पेंट करने से पहले मास्क टेप का इस्तेमाल करें और अंतिम कोट से पहले उसे हटा लें जिससे कि सतह से उतर न जाये।
- जहां तक संभव हो, आंतरिक भाग के लिए जलाधारित पेंट का चुनाव करें जिससे कि पेंट करने की प्रक्रिया उस मकान में रहने वालों के लिए सुखद रहे।

पेंटकृत धरातल के रख-रखाव के लिए कुछेक परामर्श

धरातल को नई शान देने के लिए 2-3 वर्ष में एक बार पेंट जरूर करायें। मकान सुन्दर दिखे, इसके लिए पेंटकृत स्थान का रख-रखाव करना भी आवश्यक है। इन स्थानों की देखभाल प्रत्येक छः महीने में की जानी चाहिए।

- पेंटकृत धरातल से धूल-धब्बे हटाने के लिए किसी साफ सफेद कपड़े अथवा स्पंज का इस्तेमाल करें। कपड़े अथवा स्पंज को हल्के साबुन (डिटर्जेंट) के घोल में डुबोकर धरातल की सफाई की जाए। सफाई के पश्चात् डिटर्जेंट के दाग धो डालें और सुखा दें।
- जिन दीवारों पर डिस्टेंपर किया गया है। उनको हल्के और बिना दबाव से साफ करना चाहिए।
- इनेमल वाले धरातल को डिटर्जेंट के घोल से साफ किया जा सकता है और उसे तत्काल सुखा देना चाहिए। इसके लिए थिनर का प्रयोग बिल्कुल न करें।
- यदि धातु अथवा स्टील फर्नीचर का पेंट खराब हो जाता है, तब उस पर तत्काल प्राइमर और पेंट कर दें जिससे उस पर जंग न लगे।
- अच्छी किस्म की लकड़ी-जैसे कि टीक इत्यादि के लिए, साफ लकड़ी की पालिश करवायें तथा जहां सस्ती लकड़ी पर सिंथेटिक इनेमल का चयन किया जाना चाहिए।
- आशा है, जब अगली बार आप अपने घर में सफेदी करायें तो उस में नई चमक, नई आभा आलोकित होगी।

भारत में आवास की समस्या एवं समाधान

युविका सुम्बली
सहा० प्रबंधक

हम सब ये जानते हैं कि भारत एक बहुत बड़ा देश है। आजादी के समय से लेकर आज तक का भारत बहुत अलग है। आजादी के समय पर, देश की हालत बहुत खराब थी। लोग बेकार थे, और पढ़ाई लिखाई का भी हाल कुछ अच्छा नहीं था। परन्तु धीरे-धीरे देश आगे चलता रहा और देश की हालत ठीक होती गई।

आज ऐसा समय आ गया है कि पूरे विश्व की नज़र भारत पर है। भारत के लोगों ने पूरे विश्व में अपना नाम किया है। अमरीका या ब्रिटेन कोई भी विश्व का देश हो, भारत और भारतीयों ने उसमें अपना नाम किया है। आज समय आ गया है कि भारत की अर्थव्यवस्था इतनी अच्छी हो गई है कि पूरा विश्व भारत देश को अपेक्षा की नजरों से देखता है।

भारत में पूर्वी कंपनियां आ रही हैं। शहरों के नौजवानों को नौकरी देने जहां पर पहले एक ग्रेजुएट को कोई नौकरी नहीं मिलती थी आज बच्चों के कालेज खत्म होने से पहले ही उनकी नौकरी लग जाती है। पूरे देश में धन सम्पति का आवाह्न है। शहरों में रहने वाले लोगों के पास सब कुछ आ रहा है-पैसा, अच्छी नौकरियां, परन्तु इस विकास का एक दूसरा पहलू भी है। आवास समस्या, कहने को समस्यायें और भी हैं परन्तु आवास की समस्या सबसे ज्यादा बढ़ी है।

विकास के कारण ग्रामीण लोग शहरों में आ रहे हैं क्योंकि कोई भी कम्पनी गांव में नहीं जाना चाहती है इसलिए नौकरी की चाह में काफी ग्रामीण लोग शहरों में आते हैं, और यहीं बस जाते हैं। जब एक व्यक्ति शहर आता है उसके साथ-साथ उसका पूरा परिवार भी शहर में रहने लगता है।

इन सब कारणों से आवास की समस्या बहुत बढ़ जाती है। एक तो लोग शहरों में पहले से रह रहे हैं ऊपर से वे लोग भी हैं जो काम की चाह में शहरों में आते हैं। इस समस्या के दो परिणाम निकलते हैं। एक जो शहरों में आवास के योग्य जगह है वे दवाब में आते हैं, क्योंकि जिन जगहों में आवास उपलब्ध है, वहां ज्यादा लोग रहने को आते हैं, और जब रहने की जगह नहीं मिलती है वहाँ पर छोटे मोटे, घर बना लेते हैं, जहाँ न पानी होता है न वह रहने योग्य जगह होती है।

दूसरा परिणाम है कि अच्छी जगह, जो एक अच्छे आवास में विकसित हो सकती है, वह ऐसे ही बर्वाद हो जाती है।

लोगों के शहरों में आने से, गाँव भी अविकसित रह जाते हैं। गाँव में भी जागरूता नहीं आ पाती है, और हमारे गांव ऐसे के ऐसे रह जाते हैं, क्योंकि जो लोग शहर आ जाते हैं, वे विकसित हो जाते हैं और जो गांव में रह जाते हैं, वे अविकसित रह जाते हैं, ऐसे ही यह चक्र चलता रहता है।

इस समस्या का हल बहुत जरूरी है, क्योंकि अगर हम चाहते हैं कि भारत की ग्रामीण जनता को देश की सफलता में लाना है तो हमें इस समस्या को जड़ से मिटाना होगा।

मेरे विचार में इस समस्या का बहुत महत्वपूर्ण समाधान यह है कि हम लोग गाँव में रोजगार बढ़ायें। जबकि हमारे गाँवों में रोजगार बढ़ेगा, कम ग्रामीण लोग शहरों की ओर आयेंगे। गाँव में रोजगार बढ़ाने का एक तरीका है ग्रामीण प्रांतों में शिक्षा को लाना। अगर ग्रामीण लोग शिक्षित होंगे कम्पनियां शहरों को छोड़ गाँव में जायेंगी, लोगों को रोजगार मिलेगा तो वह शहरों में नहीं आना चाहेंगे। गांव विकसित होगा, और जो जमीन वहां पर बेकार पड़ी है वह उपयोग में आयेगी।

अगर ग्रामीण लोगों को शिक्षा मिलेगी तो वह बैंकों व दूसरे कर्ज़ देने वाले लोगो से पैसा लेकर अपना कारोबार वहाँ पर जमा सकते हैं। आज ऐसा माहौल है कि बैंक जैसी कम्पनियां ग्रामीण लोगों को पैसे देने से डरती है, क्योंकि उनके पास रोजगार नहीं है, पैसे नहीं है। यह सब समस्यायें गाँवों के विकास से समाप्त हो जायेगीं।

शहरों में रहने वाले लोगों, के पास पैसे होते हैं, नौकरी होती है, उनमें एक से ज्यादा घर लेने की क्षमता है, ऐसे लोगों को चाहिये कि वह, बहुत सारे घर न ले, क्योंकि इसका सीधा असर आवास की कीमतों पर होता है। जब कम आवास है, और ज्यादा लोग खरीदते हैं, कीमतें काफी बढ़ जाती हैं। घरों की खरीददारी में शहरी लोगों को सयंम वर्तना जरूरी है। सरकारों को चाहिये कि वे ये देखें कि किस-किस के पास, एक से ज्यादा घर हैं, कहीं वे उसका दुरुपयोग तो नहीं कर रहे हैं।

भारत को एक विश्व स्तर का देश बनाने के लिए आवास की समस्या का समाधान बहुत जरूरी है। अगर इस समस्या का जल्द ही समाधान न ढूंढा गया तो यह मूसीबत काफी बढ़ सकती है और यह हमारी विकास में रोड़ा बन सकता है। अतः इस समस्या का समाधान जल्द हो होना चाहिए। अगर पूरा समाधान नहीं हो सकता, फिर भी, इस दिशा में कदम शीघ्र उठाना जरूरी है।

भूसंपदा (रियल एस्टेट) के क्षेत्र में भारत की धूम

–सोनिया भल्ला
सहायक प्रबंधक

भारत में भूसंपदा (रियल एस्टेट) का क्षेत्र तेज़ी से बढ़ रहे क्षेत्रों में से एक है। भारतीय व्यापार प्रक्रिया के बाह्य स्रोतों में वृद्धि हो जाने के कारण वाणिज्यिक भूसंपदा में एक आश्चर्यजनक लहर आने के साथ भारत में बाज़ार विश्लेषण भूसंपदा से 14% के एक वार्षिक औसत पर तरक्की कर रहा है। पट्टागत किराए की आय बढ़ती जा रही है क्योंकि बाह्य स्रोतों की सहस्त्रावृद्धि निर्माण क्षेत्र तक चली जाती है। इसके अतिरिक्त, आवास क्षेत्र वार्षिक औसत रूप से 34% बढ़ रहा है।

मैकिन्से की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में निर्माण से औसत लाभ 18% होता है। राष्ट्र की प्रगति के इंजन के रूप में भूसंपदा क्षेत्र का महत्व इस तथ्य से आंका जा सकता है कि यह केवल कृषि के बाद दूसरा सबसे बड़ा नियोक्ता है। इसकी राशि 12 मिलियन यूएस डॉलर के निकट है और लगभग 30% वार्षिक की दर से बढ़ती है। देश के सकल घरेलू उत्पाद के पांच प्रतिशत का अंशदान आवास क्षेत्र करता है। आगामी तीन अथवा चार अथवा पांच में सकल घरेलू उत्पाद में इस अंशदान की 6% तक बढ़ जाने की आशा की जाती है।

भूसंपदा उद्योग के अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों और 250 सहयोजित उद्योगों के साथ सार्थक संबंध हैं। इस क्षेत्र में निवेशित एक रुपया को परिणामस्वरूप राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में 78 पैसे का अंशदान माना जाता है। निजी साम्य धारी (इक्विटी) बड़ा निवेश मान रहे हैं, बैंक भवन निर्माताओं को ऋण दे रहे हैं और वित्तीय संस्थान भूसंपदा कोष बना रहे हैं। भारतीय संपत्ति बाज़ार बहुत आशाजनक और बहुत से व्यापक कारणों से सबसे अधिक लोग यहां आना पसंद करते हैं।

भारत के भूसंपदा बाज़ार में भारी उछाल

- यह सदैव एक बढ़ती अथव्यवस्था है, जो पिछले कुछ एक वर्षों में देखी गई 8 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि के साथ लगातार बढ़ रही है।
- भारत प्रति वर्ष विभिन्न भारतीय विश्वविद्यालयों से उत्तीर्ण औसतन 2 मिलियन स्नातक तैयार करता है और उनके लिए कार्यालय और औद्योगिक स्थान में 100 वर्ग फीट की मांग पैदा करता है।
- बहुत सी फॉर्च्यून 500 और अन्य प्रतिष्ठित कंपनियों की उपस्थिति से कंपनी कार्यालयों के लिए अधिक जगह की मांग पैदा हो रही है।
- भारत में निवेश से भारी लाभांश मिलता है। 70 प्रतिशत विदेशी निवेशक भारत में लाभ कमा रहे हैं।

भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश विश्वव्यापी रूप में लगभग सभी देशों के लिए राष्ट्रीय विकास नीति का एक अभिन्न अंग बन गया है। यह एक वैश्विक लोकप्रियता और स्वदेशी पूंजी, उत्पादकता एवं रोज़गार को बढ़ाने में एक सकारात्मक निवेश है और इसने इसे राष्ट्रों के लिए आर्थिक विकास शुरू करने का अनिवार्य साधन बना दिया है।

भारत प्रशान्त महासागर और एशिया में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लिए सर्वाधिक अनुकूल गंतव्यों में से एक है। भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश ने आज के समय में आर्थिक व्यवस्था के समग्र विकास हेतु प्रभावी अंशदान किया है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का अंत: प्रवाह का संघात भारत की नई प्रौद्योगिकी और अभिनवकारी अंतरण, अधिरचना के समुन्नयन, व्यापार के प्रतियोगी वातावरण पर हुआ है।

पिछले दशक से, भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक नायक के रूप में उभरा है। यह प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लिए एक आकर्षण है। बहुत सी विदेशी कंपनियां भारत में परिचालन शुरू कर रही हैं अथवा बढ़ा रही हैं। इली लिली, जनरल इलैक्ट्रिक और ह्यूलैट पैकर्ड सहित सभी फॉर्च्यून 500 कंपनियों की 1/5 कंपनियों ने भारत में अनुसंधान एवं विकास सुविधाएं स्थापित कर ली हैं।

भारत सरकार की ओर से अपनी नई आर्थिक नीतियों के ज़रिए नए द्वार खोलने की नीतियों ने देश में अधिक निवेश आकर्षित किया है।

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की नीति

निम्नलिखित को छोड़कर, सभी गतिविधियों/क्षेत्रों में स्वचालित मार्ग के अधीन 100% तक के प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति है, किन्तु निम्नलिखित के लिए सरकार का अनुमोदन आवश्यक है:–

- ऐसी गतिविधियां/मदें, जिनके लिए औद्योगिक अनुज्ञप्ति आवश्यक होती है।
- ऐसे प्रस्ताव, जिनमें विदेशी सहयोगकर्ता का भारत में उसी अथवा संबद्ध क्षेत्र में पूर्वतम/वर्तमान उद्योग/संबंध है।
- किसी विदेशी/अनिवासी भारतीय निवेशक द्वारा किसी वर्तमान भारतीय कंपनी में शेयरों के अर्जन से संबंधित सभी प्रस्ताव।
- ऐसे क्षेत्रो, जिनमें प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुज्ञा नहीं है, में अथवा अधिसूचित क्षेत्रीय नीति/प्रतिबंध से बाहर आने वाले सभी प्रस्ताव।

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश नीति का एक चालू पुनरीक्षण इसलिए किया जाता है कि अधिक उदारीकरण शुरू किया जा सके। क्षेत्रीय नीति/क्षेत्रीय साम्य (इक्विटी) कैप में परिवर्तन प्रेस विज्ञप्तियों के ज़रिए समय-समय पर अधिसूचित किया जाता है।

भूसंपदा में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लाभ

भूसंपदा में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश निधियों का भारी अंत:प्रवाह पैदा कर सकता है जो भूसंपदा विकास का उच्चतर स्तर प्राप्त करने के लिए स्वदेशी निवेश को बढ़ा सकता है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश नए विचारों और प्रौद्योगिकियों के अतिरिक्त निश्चित रूप से उपयुक्त सस्ती दरों पर निधियां पैदा कर सकता है जिससे भारतीय भवन निर्माण उद्योग की कुशलता बढ़ेगी।

भारत के भूसंपदा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश संबंधी नवीनतम विनियामक परिवर्तन

प्रेस विज्ञप्ति सं.2 (2005 शृंखला) प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की भारतीय नीति-2006

रोज़गार के नए अवसर पैदा करने और उपलब्ध आवासीय स्टॉक तथा निर्मित अधिरचना में जोड़ने, आर्थिक गतिविधियां उत्पन्न करने के लिए एक साधन के रूप में, उपनगरी, आवास, निर्मित अधिरचना और भवन निर्माण की विकास परियोजनाओं में निवेश को उत्प्रेरित करने की दृष्टि से, भारत सरकार ने उपनगरी, आवास, निर्मित अधिरचना और भवन निर्माण की विकास परियोजनाओं (जिनमें आवास, वाणिज्यिक परिसर, होटल, सैरगाह, अस्पताल, शैक्षणिक संस्थान, मनोरंजन की सुविधाएं, नगर, एवं क्षेत्रीय स्तर की अधिरचना सहित, किन्तु इन तक प्रतिबंधित नहीं) में स्वचालित मार्ग से 100% तक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति निम्नलिखित दिशा-निर्देशों के अधीन देने का विनिश्चय किया है:–

स्वचालित मार्ग से 100% प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति उपनगरी, आवास, निर्मित अधिरचना और भवन निर्माण की विकास परियोजनाओं (जिनमें आवास, वाणिज्यिक परिसर, होटल, सैरगाह, अस्पताल, शैक्षणिक संस्थान, मनोरंजन की सुविधाएं, नगर एवं क्षेत्रीय स्तर की अधिरचना सहित, किन्तु इन तक प्रतिबंधित नहीं) में यथा निम्न कतिपय दिशा-निर्देशों के अधीन है-

क. प्रत्येक परियोजना में विकसित किया जाने वाला न्यूनतम क्षेत्र निम्न प्रकार से होगा:–

i. शोधित आवासीय भूखंड के विकास के मामले में, 10 एकड़ की न्यूनतम भूमि;

ii. भवन निर्माण विकास परियोजनाओं के मामले में 50,000 वर्गमीटर का न्यूनतम निर्मित क्षेत्र;

iii. किसी मिली-जुली परियोजना के मामले में उपर्युक्त दोनोंशर्तों में कोई भी पर्याप्त होगी।

ख. प्रत्येक परियोजना में विकसित किया जाने वाला न्यूनतम क्षेत्र निम्न प्रकार से होगा।

i. सम्पूर्ण स्वामित्वाधीन गौण कंपनियों के लिए 10 मिलियन अमरीकी डॉलर और भारतीय भागीदारों के साथ संयुक्त उद्योग के लिए 5 मिलियन अमरीकी डॉलर का न्यूनतम पूंजीकरण। निधियां कंपनी का व्यापार प्रारम्भ होने के 6 महीनों के भीतर लानी पड़ेंगी।

ii. मूल निवेश न्यूनतम पूंजीकरण के पूरा होने से तीन वर्षों की एक अवधि से पूर्व प्रत्यावर्तित नहीं किया जा सकता। तथापि, निवेशक को एफआईपीबी के ज़रिए सरकार के पूर्व अनुबोध से पहले भी चले जाने की अनुज्ञा दी जा सकती है।

ग. परियोजना का कम से कम 50% सभी सांविधिक स्वीकृतियां प्राप्त करने की तारीख से पांच वर्षों की अवधि के भीतर विकसित किया जाना चाहिए। निवेशक को अविकसित भूखंडों को बेचने की अनुज्ञा दी जाएगी।

इन दिशा-निर्देशों के प्रयोजनार्थ, अविकसित भूंखडों का अर्थ होगा कि जहां, सड़कें, जलापूर्ति, स्ट्रीट लाइट व्यवस्था, नालियां मलव्ययन व्यवस्था और अन्य सुविधाएं, जो कि विहित विनियमों के अधीन लागू होती हैं, वहां उपलब्ध करा दी गई हैं। यह आवश्यक होगा कि निवेशक ये सुविधाएं प्रदान करे और उसे शोधित के निपटाने की अनुमति दी जाने से पूर्व वह संबंधित स्थानीय निकाय/सेवा अभिकरण पूर्णता का प्रमाण-पत्र प्राप्त करे।

घ. परियोजना, भूमि उपयोग की अपेक्षाओं और संबंधित राज्य सरकार/नगर पालिका/स्थानीय निकाय के अन्य विनियमों और लागू भवन निर्माण नियंत्रण विनियमों, उप विधियों, नियमों में यथा निर्धारित सामुदायिक सुख-सुविधाओं और सामान्य सुविधाओं सहित मानदंडों तथा मानकों के अनुरूप होगी।

ङ. निवेशक भवन निर्माण के नक्शों, आंतरिक और परिधीय क्षेत्रों तथा अन्य आधारिक सुविधाओं, विकास के लिए भुगतान, बाह्य विकास एवं अन्य प्रभारों के अनुमोदन सहित सभी आवश्यक अनुमोदन प्राप्त करने का और संबंधित राज्य सरकार/नगर पालिका/स्थानीय निकायों के लागू नियमों/उप विधियों, विनियमों के अधीन यथा विहित अन्य सभी अपेक्षाओं के अनुपालन के लिए उत्तरदायी होगा।

च. संबंधित राज्य सरकार/नगर पालिका/स्थानीय निकाय, जो भवन निर्माण/विकासीय नक्शों का अनुमोदन करता है, वह विकासक द्वारा उपर्युक्त शर्तों के अनुपालन की निगरानी रखेगा।

उद्योग अवलोकन

जहां तक भूसंपदा का प्रश्न है, अंतर्राष्ट्रीय निवेशक निवेश के लिए भारत को एक संभावित सकारात्मक गंतव्य के रूप में देख रहे हैं। यहां बल शब्द "संभाव्य" है। भारत में भूसंपदा के खुदरा व्यापार में भी यह उल्लेख किया जाता है कि भूसंपदा के क्षेत्र में भारत और अंतर्राष्ट्रीय विकासकों के बीच संयुक्त उद्यम बढ़ने की संभावना है।

विदेशी कंपनियों के नाम

- कुछ कंपनियों ने कैपल लैंड (सिंगापुर), एमार (दुबई), सलीम ग्रुप (इंडोनेशिया), किक्केन सैक्केल (जापान), यूके एडॉ लिमिटेड (यूएस) का हाई प्वाइंट रेंटल जैसी कंपनियों के साथ उपनगरी विकसित करने के लिए स्थानीय भागीदारों से संबंध स्थापित कर लिया है।
- अनुमान बताते हैं कि 5 बिलियन यूएस डॉलर से अधिक निधियां भारतीय भूसंपदा बाज़ार में निवेश के लिए रखी गई हैं जिनमें काल पीईआरएस (400 मिलियन यूएस डॉलर), आईसीआईसीआई टिशमैन स्पीयर (300 मिलियन यूएस डॉलर), कार्लाइल (300 मिलियन यूएस डॉलर), इत्यादि शामिल हैं। हिंदुसतान टाइम्स, 03 जुलाई, 2006।

भावी दृष्टिकोण

ए मैकिन्से एंड कं./भारत में नए आवास की मांग पर राष्ट्रीय अनुप्रयुक्त आर्थिक अनुसंधान परिषद के अध्ययन में 2015 तक नए रिहायशी मकानों की 4-6 बिलियन वर्गफीट भूमि के लिए मांग का पूर्वानुमान बताया गया है (हिंदुस्तान टाइम्स, 03, 2006 और 18 जुलाई, 2006)। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश संबंधी दिशा-निर्देशों में आवास, कार्यालय भवनों, खुदरा स्टोरों, अनुसंधान एवं विकास सुविधाओं, होटलों, सैरगाहों, प्रौद्योगिकी पार्कों और अन्य वाणिज्यिक भूसंपदा परियोजनाओं सहित भारत के भवन निर्माण के क्षेत्र में अनुमानित यूसएस डॉलर 1 बिलियन से यूएस डॉलर 1.5 बिलियन वार्षिक विदेशी निवेश की लहर उमड़ने की आशा की जाती है। अप्रैल, 2004 से, जब भारतीय प्रतिभूति विनिमय बोर्ड ने स्थानीय भूसंपदा में निवेश के लिए जोखिम निधियों की अनुमति दी थी, तब कुछ 30 विदेशी कंपनियों ने भारत में परिचालन शुरू करने के लिए आवेदन किया था। प्रथम स्वदेशी कोष, फायर पूंजी को 50 मिलियन यूएस डॉलर जुटाने के लिए जुलाई, 2005 में हरी झंडी मिल गई थी। भारत के भूसंपदा क्षेत्र में रूप तबसे बढ़ी है, जबसे फरवरी, 2005 में सरकार ने हरित क्षेत्र की भूसंपदा परियोजनाओं में प्रत्यख विदेशी निवेश की स्वीकृति दी है। यूएस और पश्चिमी यूरोप जैसे परिपक्व बाज़ारों में 3% से 4% के साथ तुलना में भारत में प्राप्ति 12% से 15% तक है।

नवीनतम घटनाक्रम

- ❑ सरकार के भसंपदा क्षेत्र की कंपनियों के लिए अमरीकी निक्षेपागार की प्राप्तियों और वेश्विक निक्षेपागार की प्राप्ति (एडीआर और जीडीआर) मार्ग का पुनरीक्षण करने की संभावना

सरकार के अमरीकी निक्षेपागार प्राप्ति (एडीआर) और वैश्विक निक्षेपागार प्राप्ति (जीडीआर) जारी करने से भूसंपदा क्षेत्र की कंपनियों को वर्जित करने की संभावना है। सरकार का विचार है कि भूसंपदा में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश से संबद्ध शर्तों, विशेष रूप से वहां, जहां किसी को निवेशकों से कम से कम तीन वर्षों तक अपनी निधियां फंसाने की अपेक्षा रहती है, को लागू करना कठिन हो गया है।

सरकार ने हाल ही में यह देखते हुए इस क्षेत्र में विदेशी निवेश के मानदंड कड़े कर दिए हैं कि आंशिक रूप से संपरिवर्तनीय, ग़ैर-परिवर्तनीय और वैकल्पिक रूप से संपरिवर्तनीय अधिमान शेयरों के निर्गम के ज़रिए भारतीय कंपनियों द्वारा जुटाई गई सभी विदेशी निधियां यथा ऋण मानी जाएंगी और बाह्य वाणिज्यिक उधार के लिए लागू दिशा-निर्देशों के अध्यधीन होगी। भारत अब जो प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आकर्षित कर रहा है, की प्रभावी प्रमात्रा के बावजूद विदेशी कंपनियां यहां व्यापार कर रही हैं, कानून और विनियमों के मकड़जाल के बारे में निराशा व्यक्त कर रही हैं।

जहां नीतियां आशावादी और उदार हैं वहीं स्थायी बनी रहने वाली बात यह है कि जिस ढंग से इन्हें क्रियान्वित किया जाता है, उसमें बहुत कुछ वांछनीय छूट जाता है। भूसंपदा विकास के क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश नीति उन कारणों का उदाहरण देती है कि क्यों विदेशी व्यापार में पारदर्शिता का अभाव बना रहता है और विनियमों में स्थिरता भारत में विदेशी निवेश में वृहत्तर स्तरों के लिए एकल सर्वाधिक आवश्यक बाधा है।

भारतीय रिज़र्व बैंक ने भूसंपदा में शेयर बेचने के प्रारम्भिक सार्वजनिक प्रस्तावों से पूर्व विदेशी संस्थागत निवेशकों को शेयरों के आबंटन पर प्रतिबंध

भारतीय रिज़र्व बैंक ने उन बहुत सी भूसंपदा का कारोबार करने वाली कंपनियों के आवेदन स्वीकार करने बंद कर दिए जो स्वदेशी प्रारम्भिक सार्वजनिक शेयर बेचने के प्रस्ताव प्रारम्भ करने की अपनी योजना को आगे बढ़ाने में विदेशी निवेशकों से संपर्क स्थापित करने की आशा कर रहे थे।

भारतीय रिज़र्व बैंक के इस विनिश्चय का प्रभाव भूसंपदा का कारोबार करने वाली उन कंपनियों के शेयर बेचने के प्रारम्भिक सार्वजनिक प्रस्तावों पर होने की संभावना है जिन्होंने विदेशी संस्थागत निवेशकों के निवेश में योजना बनाने की संकल्पना की है। भारतीय रिज़र्व बैंक ने संभवत: संस्थागत निवेश के मार्ग में लाए जा रहे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रवाह को रोकने के लिए प्रतिकूल रूप से कार्य किया है। भूसंपदा का वर्तमान कानून विदेशी संस्थागत निवेश को और प्रत्यक्ष विदेशी निवेशकों के निवेश वैसा ही नहीं मानता है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की तीन वर्ष की एक निश्चित अवरुद्धता अवधि होती है, जबकि विदेशी संस्थागत निवेश में एक वर्ष की निश्चित अवरुद्धता अवधि है। वित्त मंत्रालय ने निष्कर्ष निकाला है कि यदि विदेशी संस्थागत निवेशक भूसंपदा का कारोबार करने वाली कंपनियों के शेयर बेचने के पूर्व प्रारम्भिक सार्वजनिक प्रस्तावों के नियोजन में निवेश करना चाहते हैं, तब निवेश को यथा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश अथवा ऐसा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश वर्गीकृत किया जाएगा जो एक लम्बी निश्चित अवरुद्धता अवधि के अध्यधीन है। संस्थागत निवेशक अथवा विदेशी संस्थागत निवेशक अपनी बाज़ी (स्टेक) एक वर्ष के बाद बेच सकते हैं जबकि किसी कंपनी में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश तीन वर्षों की निश्चित अवधि में अवरूद्ध होता है जिससे विदेशी संस्थागत निवेश मार्ग एक स्वदेशी शेयर बेचने के प्रारम्भिक प्रस्ताव से पूर्व विदेशी निवेश को अनुसूची में और विदेशी संस्थागत निवेश को पृथक रूप से अनुसूची-II में रखने के विदेशी विनिमय प्रबंधन के अधीन वर्तमान शर्तें जारी रहनी चाहिएं।

भारतीय रिजर्व बैंक विदेशी संस्थागत निवेशकों पर नियंत्रण रखता है, एक ऐसा माध्यम (विंडो) प्रदान करती है, जो भूसंपदा का कारोबार करने वाली कंपनियों को शेयर बेचने के प्रारम्भिक सार्वजनिक प्रस्ताव से पहले शेयरों को निजी नियोजन करने के लिए अनुज्ञा देता है। ऐसा निजी नियोजन एक निश्चित पूंजी उत्पन्न करता है किन्तु स्वदेशी खुदरा और संस्थागत निवेशकों को पश्चात्वर्ती सार्वजनिक प्रस्तावों के पुन: सशक्त करने में सहायता भी करते हैं। दुरुपयोग के कारण, भारतीय रिज़र्व बैंक का मानना अब यह है कि ऐसा निजी नियोजन निवेशक को यथा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश माना जाना चाहिए जबकि उद्योग मंत्रालय के लिए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश नीति हेतु एक नोडल विभाग है, यह महसूस करता है कि भारतीय रिज़र्व बैंक उन्हें यथा विदेशी संस्थागत निवेशक मानता रहे।

फिर भी उम्मीद है आने वाले वर्षों में आधारभूत संरचना तथा भूसंपदा क्षेत्र में बढ़ते निवेश से भारत के प्रमुख नगरों व साथ ही उपनगरों में उन्नति व प्रगति के नए द्वार खुलेंगे।

बाली यात्रा के कुछ संस्मरण

–ओ. पी. पुरी
सहायक महाप्रबंधक

हाल ही में मुझे इंडोनेशियन सोसाइटी आफ मानव संसाधन प्रबंधन द्वारा 'मानव संसाधन प्रबंधन–मनुष्य एंव वातावरण' विषय पर बाली में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने का अवसर मिला। सम्मेलन में चीन, भारत, ब्रिटेन, न्यूजीलैंड, बहराइन, इन्डोनेशिया, फिलीपींस, मलेशिया, एवं अन्य 12 राष्ट्रों के 292 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। भारत से 5 प्रतिनिधि, (2 अधिकारी सेल (SAIL) से, 2 अधिकारी एक्जिम बैंक से एवं एक अधिकारी राष्ट्रीय आवास बैंक से) शामिल हुए। सम्मेलन का उद्‌घाटन बाली के उप–राज्यपाल महोदय ने विशिष्ट व्यक्तियों की उपस्थिति में किया जिनमें पेनांग, मलेशिया के राज्य–मंत्री भी थे।

2. सम्मेलन में ए.आर.टी.डी.ओ. अंतर्राष्ट्रीय एच.आर.डी. पुरस्कार डा. लिनडोन एच. जोन्स (व्यक्तिगत श्रेणी) एवं (2) प्रशिक्षण एवं विकास संस्थान, मलेशिया (संस्थागत श्रेणी) को भेंट किये गये।

3. वक्ताओं द्वारा सामयिक विषयों पर बहु संख्याओं में प्रस्तुतीकरण किये। एतएव भाग लेने वाले को चुनने का अवसर दिया गया। मैंने निम्नलिखित प्रस्तुतीकरणों में भाग लिया:

सं.	प्रस्तुतिकरण शीर्षक/विषय	वक्ता
1.	मानवीय संसाधन प्रबंधन–व्यक्ति एवं वातावरण	प्रो. डा. एमिल सलीम, पूर्व जलवायु मंत्री
2.	शिक्षा एवं मानवीय संसाधन विकास के क्षेत्र में पेमांग, मलेशिया में निजि एवं पब्लिक सैक्टर में भागीदारी	टोह किन. वून, राज्य मंत्री, पेमांग (मलेशिया)
3.	सैलेक्ट डाईमैन्टस कार्पोरेट गवर्ननैन्स इलैक्ट्रोनिक मीडियम	प्रो. डा. विनयशील, गौतम आई. आई. टी. नई दिल्ली
4.	इंडोनेशियन कम्पनी अभिशासन का कोड	इरवन एम. हबस्याह, अभिशासन नीति की राष्ट्रीय कमेटी, इंडोनेशिया
5.	एच. आर. एम. एवं कम्पनी अभिशासन स्ट्रेन्ज बैड फैलोज	के सुधारमीन, एम. डी., मोटरडाटा रिसर्च कन्सोरटियम इंडोनेशिया
6.	नेतृत्व	डा. टीम, परामर्शदाता, मलेशिया
7.	परिवर्तन की प्रक्रिया में प्रबंधन विश्वास एवं मूल्यों का प्रबंन्धन।	अगुस सुनारिओ, निदेशक, अंतर्राष्ट्रीय शोध प्रशिक्षण, इंडोनेशिया।
8.	एम्पावरिंग दा कोर आफ मैनेजिंग फ्रौम दा हार्ट	सत्यो फतवान, भागीदार, पी. टी. दुनामिस इन्टरमास्टर, इंडो.
9.	अभिनवकरण एवं निकास की शिक्षा	जैनिफर लोव, यूए. यूमेन, कार्यकारी व्यापार शिक्षक, मलेशिया
10.	प्रतिभा प्रबंधन: कल के नेताओं को तैयार करना	ऐरी. प्रकासो, मनोवैज्ञानिक
11.	शिक्षण–अभिवनकरण एवं नई टैक्नालौजी	डा. आर. पालन, सी.ई.ओ., एस. एम. आर. टैक्नोलोजी, मलेशिया
12.	रिटेनिंग टेलेन्ट, हमारा नेतृत्व कैसे सहायक हो	एन्डी. विबिसोनो, वरिष्ठ परामर्शदाता, डी. डी. आई., इन्डो.
13.	पर्यावरण की समस्याओं के लिए अभिनवकरण का प्रयोग	प्रो. डा. एल. आर. सुरना टी. डी., डीन, बिजनैस एण्ड मैनेजमैंट स्कूल, इंडोनेशिया
14.	मास्टर एच. आर. फन्कसंस इन डवलपिंग नेशंस थ्रू एच. आर. मैट्रिक्स	तारिक अल सुलीमानी, एम. डी., लीडर फार मैनेजमैंट कंसलटैंसी, साऊदी अराबिरया
15.	नॉलिज इन्नोवेशन इन न्यू ऐरा इन. इच. आर. फंकशंस	एलविन सोलेह, नॉलिज पार्टनर, के. एम. प्लस कन्सलटेन्सी, इन्डोनेशिया।

4. अपने अनुभवों को बांटने के अतिरिक्त, वक्ताओं का ध्यान मुख्य रूप से i, कम्पनी अभिशासन ii, पर्यावरण सुरक्षा iii, सकल नेतृत्व और iv, मानवीय संसाधन समस्याएं एवं उनके हल पर केन्द्रित था।

5. सम्मलेन में निम्न संस्थाओं द्वारा अपने उत्पादों एवं सेवाओं को दिखाने के लिए प्रदर्शनी स्टाल भी लगाये गये थे:

सं.	प्रदर्शक	क्रिया-क्लाप
1.	पी. पी. एम. प्रबंधन संस्थान, इंडोनेशिया	प्रबंधन शिक्षा में सेवा प्रदान करता है- जैसा कि मास्टर एवं स्नातक डिग्री प्रोग्राम, प्रबंधन दूरस्थ शिक्षा एवं प्रबंध प्रशिक्षण। इसने एक प्रकाशन कम्पनी की भी स्थापना की है जो प्रबंधन की पुस्तकें प्रकाशित करता है।
2.	डी. डी. आई., इन्डोनेशिया (विकास परिमाप अन्तर्राष्ट्रीय, एक मानव संसाधन परामर्शदाता, अमरीका का प्रतिनिधि, इंडोनेशिया	इन्डोनेशिया में भिन्न-भिन्न स्तर के व्यवस्थापकों के चुनाव और विकास कार्य करता है।
3.	पी. क्यू. एम. परामर्शदाता, इंडोनेशिया	एक परामर्श दाता प्रशिक्षण एवं शोध संस्थान
4.	ओपस मैनेजमैंट, इंडोनेशिया	प्रबंधन एवं समाधान पर ध्यान केन्द्रित करने वाली परामर्शदाता संस्था।
5.	आउटवार्ड बाउन्ड, इंडोनेशिया	मनुष्यों की सक्षमता विकसित करने में सहायता करती है। सुरक्षा जांच भी करती है।
6.	पी. टी. सिकूरेज्जा सोलूशन, इंडोनेशिया।	सुरक्षा एवं दूरसंचार साधन प्रदान करता है।

6. सम्मेलन के दौरान, मुझे 'बाली' के प्राकृतिक सौन्दर्य एवं सुरम्यता को देखने का सुअवसर भी मिला। वाली मुख्यत सैलानियों पर आश्रित है। समुद्र तट अत्यधिक सुंदर, सफेद रेत से ढका हुआ, एवं भारतीय समुद्र का पारदर्शी नीला जल था। एक लय के साथ उभरती सुंदर तरंगों 'बाली' समुद्र तट और समुद्र तल को एक आदर्श स्थान बना रही थी। पूरे साल संसार के विभिन्न देशों से सैलानी 'बाली' को देखने आते हैं। 'बाली' के लोग व्यवहार-कुशल एवं उच्च अतिश्यपूर्ण हैं। दुकानें अधिकतर महिलाओं के द्वारा चलायी जाती हैं। यहां के लोग अधिक धार्मिक एवं जीवन का आनंद लेने में विश्वास रखते हैं।

कुछ समय पूर्व इंडोनेशियन मुद्रा का भारी अवमूल्यन किया गया था। परिणाम-स्वरूप प्रत्येक वस्तु की कीमत इंडोनेशियन रुपया में लाखों और सहस्रों में आती है। मुझे हवाई अड्डे से होटल तक की यात्रा पर 45000 रु. खर्चा पड़ा। पीने के पानी की बोतल की कीमत 15000 रु. पड़ी। और चाय के कप की कीमत 8,500 रु. थी। अनेक दुकानों एवं संस्थानों पर अमेरिकन डालर मान्य था। भारतीय रुपया वहां के 250 रुपये के बराबर है।

पब्लिक टैक्सी सेवा विशेष रूप से उत्तम थी। सारी टैक्सियां वातानूकुलित एवं अच्छी दशा में थी। हमें भारत में सैलानियों को लुभाने के लिए जनता यात्रा सेवा में सुधार की आवश्यकता है।

तथापि, शाकाहारी भोजन बाजार में दुर्लभ वस्तु था। कार्यक्रम के दौरान आयोजक एक शाम बाली के बाहरी क्षेत्र में आगन्तुकों को समुद्र तट पर ले गये थे। पके हुए चावल को छोड़कर सब प्रकार के भोजन मांसाहारी थे। इतना ही नहीं, केकड़ा और समुद्र के अन्य जीव साबुत ही पका दिये गए थे।

सामान्यत: शाकाहारी होने के नाते, मुझे उस रात केवल उबला हुआ चावल, चटनी के साथ खाकर गुजारा करना पड़ा। आज के युग में जहां शाकाहारी भोजन की अच्छाई के बारे में जागरूकता बढ़ी है, बाली जैसे पर्यटकों की रूचि की जगहों में मांसाहारी भोजन के साथ शाकाहारी भोजन को प्रोत्साहन देना चाहिए।

7. मेरे वहां जाने के उद्देश्य की तरफ मानव संसाधन विकास सम्मेलन में प्रस्तुति एवं विचार-विमर्श अत्याधिक सूचनाप्रद थे। ऐसा लगता था जैसे यह "ज्ञान-पर्व" हो। विभिन्न प्रस्तुतियों के दौरान वक्ताओं द्वारा की गई मुख्य सूचनाजो हमारे यहाँ उपयोगी हो सकती है नीचे सारांश में वर्णित की गई है:

1. आज के व्यापार के वातावरण में कम्पनी अभिशासन आधारभूत आवश्यकता है। सूचना प्रोद्योगिकी/इलैक्ट्रोनिक माध्यम ज्ञान का एवं कम्पनी अभिशासन का केन्द्र है। मानव संसाधन प्रबंधन एवं कम्पनी अभिशासन एक दूसरे के पूरक हैं। संस्थाओं को सब पणधारकों के साथ, चाहे संचालक हो, भागीदार, कर्मचारी ग्राहक और समाज, बड़े पैमाने पर विश्वसनीयता पैदा करने की जरूरत है।

2. पर्यावरण सुरक्षा मुख्य है। अनूकूल पर्यावरण रूझान, एवं मूल्यों को अपने व्यापार में विकसित करें।

   (पूर्व प्रयोग किया कागज, सूर्य ऊर्जा, भू-ऊर्जा का प्रयोग करो। पर्यावरण सुरक्षा को अपनी योजनाओं में प्रोत्साहित करने के लिए उचित खंड जोड़ें।)

3. गहन निर्णयों का 6 माह या एक साल के बाद पुनरावलोकन करना चाहिए। अपेक्षाओं को नोट करें। जानकारी प्राप्त करें एवं तुलना करें। उन निर्णयों को बदल दें जिनके परिणाम अपेक्षित नहीं रहे। दीर्घकालीन स्थायीत्व के लिए काम करें।

4. विश्वास एवं मूल्य संगठन में प्रेरणा एवं संस्कृति को प्रभावित करते हैं। विश्वास एवं मूल्य कौन सी योजना/क्रियाएं सफल होंगी या रद्द करनी पडेंगी, निर्धारण करते हैं। परिणाम के बारे में हमारा विश्वास निर्णय की सफलता को निर्धारित करता है। संस्थाओं एवं संस्थाओं के अन्दर बनी टीमों को प्रचलित विश्वासों को आंकने तथा संबंधित विश्वास के क्षेत्रों को आंकने की कोशिश करनी चाहिए जिनको मजबूत करने की आवश्यकता है। हमें अपने विश्वासों, तथा संस्थान में प्रचलित मूल्यों एवं संस्कृति अन्तर्निरीक्षण करना चाहिए।

5. नेतृत्व शैली एवं संगठनात्मक वातावरण/संस्कृति महत्वपूर्ण ढंग से व्यापार के फल को प्रभावित करती है। रचनात्मक प्रबंधक सबसे अधिक सफल हैं। लोगों को रचनात्मकता दिखाने की जगह दो।

6. हम दूसरों की सहायता पर निर्भर रहते हैं।

   क. निस्वार्थ होने का प्रयत्न करो। दूसरों को दो, हृदय से धनवान बनो। ज्ञान एवं सहायता बांटो।

   ख. स्वयं को अन्दर से खोजो, ध्यान लगाओ, खेलो, प्रार्थना करो, दोष पूर्ण भावनाओं से मुक्त रहो।

   ग. आदर्श बनो, दूसरों को रास्ता दिखाओ, निर्माण करो, अपने चारों ओर संसार को सुधारने का प्रयत्न करो।

7. पहचानो कौन सी चीजें आपके संगठन में रचनात्मक-अभिनवकरण में बाधक हैं। बाजार में उपलब्ध समर्थता आंकने वाले मानव संसाधन यंत्रों की नकल मत करो। अपने संगठन से संबंधित सर्वोतम अभ्यासों को खोजो एवं उन पर अमल करो। जो योग्यता को नहीं बढ़ातीं उन चीजों से छुटकारा पाओ। व्यक्तियों का मूल्यांकन करो, कार्य-प्रणाली का मूल्यांकन करो, अपनाये गये अभ्यासों के प्रभाव का माप एवं मूल्यांकन करो।

8. 66% से अधिक उच्च वृद्धि वाली कम्पनियां आंतरिक गुणता विकास की कदर करती हैं। वे अधिकारियों के उनके कार्य-पालन वर्ष में एक से अधिक बार जांच करती हैं। अपने लोगों को जानो। उनका मूल्यांकन करो। टीम को पुरस्कृत करो अपेक्षाकृत मनुष्यों के। अधिकारियों के वार्षिक प्रशिक्षण को अनिवार्य करो।

9. प्रौद्योगिकी, परिवर्तन, स्पर्धा स्थिरता, व्यापार की वृद्धि में सहायक हो सकती है। परंतु संगठन की

संस्कृति के सुधार में सहायक नहीं हो सकती। यह कार्य संगठन में कार्य करने वाले व्यक्तियों के द्वारा किया जाना होगा।

10. योग्य अधिकारियों को संस्थान छोड़ने से रोकने के उपाय :

क. भविष्य योजना, मान्यता एवं पुरस्कार की कमी कर्मचारियों को पेशा परिवर्तन करने की ओर प्रेरित करती है।

ख. सीनियरज के साथ संबंधों की गुणवता सबसे अधिक स्थायित्व प्रदान करती है। (लोग अपने के लिए काम करते हैं, कम्पनी के लिए नहीं) टीम के नेता लोगों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व निभाते हैं। नेताओं को दूर-दृष्टि की जरूरत है, कार्य संचालन की पहचान, विश्वास का वातावरण पैदा करना, टीम की भावना का विकास एवं आशा का माहौल पैदा करना। टीम का नेता असफलता की जिम्मेदारी ले, और टीम के सदस्यों को उसके दोषी न ठहराये।

ग. उत्तरदायित्व निश्चित करो। संबंधित कर्मचारियों को सलाह दो। विफलताओं से सीखो, गलतियों के लिए कर्मचारियों को दंड मत दो। अन्यथा वे जोखिम उठाना बंद कर देंगे। रचनात्मकता एवं अभिनवकरण का अंत हो जायेगा।

घ. एक प्रणाली प्रयोग में लाओ कि कौन मान्यता के योग्य है। और उन्हें कौन सी पहचान दे सकते हैं।

ङ. एक प्रणाली लागू करो। यह निश्चय करने के लिए कि कौन मान्यता के योग्य हैं और उन्हें कैसे पहचानना है। संस्तुति प्रणाली से यथार्थता को दूर रखने का प्रयत्न करो।

च. सामयिक रूप से (अन्तर्विभागीय और अन्तर-विभाग) कर्मचारियों के कार्य में परिवर्तन करे।

छ. कर्मचारियों को अपने कार्य में संतुष्टि का अनुभव होना चाहिए। उन्हें ज्ञान होना चाहिए कि संगठन के उद्देश्य में उनके कार्य की भागीदारी कितनी है।

ज. वित्तीय-पारिश्रमिक सदा प्रभावी नहीं होता है। परंतु वेतन में भिन्नता दूसरे खिलाड़ियों को प्रतिभा बनाये रखने में कठिनाई पैदा कर सकती है।

कर्मचारियों की वांछनीय आवश्यकताओं का उत्तर दो। (स्टाक का चयन, वर्दी का नियम, पदोनन्यन, कल्पित उन्नतियां। राष्ट्रीय आवास बैंक एक बैंक नहीं है, भारतीय बैंकिंग एशोसिएशन से वेतन-ढांचे मत जोड़ो। वेतन ढांचे और सुविधाएं के लिए एक कमेटी का गठन करो और उसके लिए सिफारिशें करो।)

झ. ज्ञान/ सूचना संचय के लिए प्रौद्योगिकी का प्रयोग करो। ताकि व्यक्तियों की गति से कार्य संचालन में बाधा न आये। (औपचारिक बाह्य साक्षात्कार करो। राष्ट्रीय आवास बैंक की प्रौद्योगिकी को मार्गदर्शक संस्था बनाओ। आई. सी.आई.सी. आई. बैंक 40 प्रतिशत एपीशिन रेट रखता है परंतु कार्य-संचालन पर कम प्रभाव पड़ता है। यह प्रौद्योगिकी से चलाया हुआ है। नियम-मुस्तिका की रचना करो, क्रिया चार्ट, राष्ट्रीय आवास बैंक को प्रौद्योगिक संचालित संस्था बनाने के लिए समय-का निर्धारण करो।)

11. मानव संसाधन गति के अनुकूल होने चाहिए। मानव संसाधनों को अनुकूल उद्देश्य प्राप्त करने के लिए सारे कार्य संचालनों की सहायता करनी चाहिए। मानव-संसाधनों को व्यापार-गठित बनाओ। मानव-संसाधन के प्रभाव को मापना चाहिए।

मेरी यादें

– आर. के. अरविंद
उप प्रबंधक

जब मुझे कृषि अधिकारी के पद के लिए एक राष्ट्रीयकृत बैंक से नियुक्ति का प्रस्ताव मिला, तब मैं बहुत रोमांचित हुआ। मुझे उत्तर प्रदेश के एक दूर दराज के जिले में एक ग्रामीण शाखा में तैनात किया गया था। मेरा कार्य शाखा के कृषि अग्रिम को बढ़ाना था। महाराष्ट्र में किसानों की आत्म हत्या को ध्यान में रखकर मैंने यह निश्चय किया कि मैं किसानों की यथा संभव सहायता करूंगा और उनकी ऋण संबंधी आशाओं को पूरा करने की कोशिश करूंगा। शाखा में पहला दिन दहला देने वाला था क्योंकि शाखा प्रबंधक किसी किसान को डांट रहा था "यदि तुम ऋण नहीं चुकाते हो तब मैं वसूली का प्रमाण-पत्र जारी करूंगा।" किसान 10,000/- रु. का कर्ज ले रहा था। क्या बकवास है। ये बैंक वाले व्यवहार करना भी नहीं जानते हैं। मैंने सोचा, उन्हें अपना रवैया बदलना चाहिए। एक माह बाद मुझे अध्ययन करने के लिए एक सूची दी गई जिसमें पुनर्निर्धारित खाते अर्थात् अधिकांश फसल से जुड़े ऋण थे जहां पुनर्भुगतान का पुनर्निर्धारण किया गया था और जिसे अनुपयोज्य आस्ति घोषित नहीं किया गया था। यह राशि बकाया ऋण सूची की लगभग 50% थी। ये खाते पिछले तीन वर्षों से पुनर्निर्धारित किए जा रहे थे। "हे भगवान", यह क्या है", मैंने अपनी शाखा के उन अस्थायी कर्मचारियों से पूछा जिन्हें क्षेत्र का अच्छा ज्ञान था और जो स्थानीय थे। मैंने कहा, इन लोगों को कोई ऋण नहीं दिया जा सकता है। तब किसी समय मैंने अपनी शाखा के सेवा क्षेत्र के गाँवों का दौरा उन अस्थायी कर्मचारियों के साथ किया। मैंने महसूस किया कि वास्तव में जानबूझ कर चूक करने वाले कुछेक लोग ही मौजूद हैं। केवल किसानों की ऋण की जरूरतें पूरा करने से उनका जीवन स्तर नहीं सुधर सकता है। उन्हें अन्य सुविधाएं भी चाहिएं। कुछ छोटे और सीमान्त किसानों की भूमि पर क्षेत्र के बड़े किसानों/जमीदारों ने कब्जा कर लिया था और उन्हें काश्तकार की तरह काम करने के लिए बाध्य कर दिया था क्योंकि वे उनसे लिए हुए कर्ज में डूबे थे। किसानों को उनकी उपज का पारिश्रमिक मूल्य नहीं मिल रहा था। गांवों सड़कों से ठीक प्रकार नहीं जुड़े थे। इसलिए किसान अपनी उपज को बिचौलियों को या स्थानीय बाजार में बेचना पसंद करते थे। जहां से किसानों को पैसा कम मिलता था। स्थानीय दुकानें नकली उर्वरक एवं कीटनाशक बेचा करती थीं जिससे किसानों की लागत बढ़ जाती थी और कोई लाभ नहीं होता था। चिकित्सा सुविधाओं के अभाव से ग्रामीण परिवारों का व्यय और बढ़ जाता था। यहां तक कि निकटस्थ अच्छा अस्पताल केवल जिला मुख्यालय में था, अर्थ यह कि नीम हकीमों की चांदी थी। कुछ गांवों में ही बिजली थी। इसलिए किसानों को सिंचाई के लिए डीजल पम्पसेटों पर निर्भर करना पड़ता था और इन्हें खरीदने से उनका खर्च बढ़ जाता था। तब आखिरकार, पिछले 2-3 सालों से वर्षा कम होती आ रही थी जिसका अर्थ है कि किसानों को खेती करने में हानि उठानी पड़ रही थी और कुछ भी लाभ नहीं हो रहा था। इस सब का अर्थ है कि किसान अपने फसल ऋणों के पुनर्भुगतान में नियमित नहीं थे। शाखा अनुपयोज्य अग्रिमों की सूची बढ़ाना नहीं चाहती थी। इसलिए शाखा ऋण खातों को पुनर्निधारित किया करती थी। किंतु अन्ततोगत्वा इसके कारण किसानों को ऋण नहीं देने की ठान ली गई थी और शाखा प्रबंधक/ऋण अधिकारी नए ऋण मंजूर करने से इंकार किया करते थे। किसे दोष दिया जाए? 19.6.2007 लंदन में रिजर्व बैंक की उप गवर्नर सुश्री उषा थोरट ने एचएमटी-डीएफआईडी वित्तीय समावेशन सम्मेलन में निम्नलिखित तथ्यों की ओर संकेत किया है। देश के 203 मिलियन परिवारों में से, 147 मिलियन ग्रामीण क्षेत्रों में है, जिनमें से 89 मिलियन किसान परिवार हैं। 51.4 प्रतिशत चक (फारम) परिवारों की ऋण के औपचारिक या अनौपचारिक स्रोतों तक कोई पहुंच नहीं है जबकि 73 प्रतिशत की ऋण के औपचारिक स्रोतों तक पहुंच नहीं है। 1991 के बाद, गैर-संस्थागत स्रोतों की हिस्सेदारी बढ़ गई है, विशेष रूप से धन उधार देने वालों की ग्रामीण परिवारों के ऋण में हिस्सेदारी 1991 में 17.5 प्रतिशत से बढ़कर 2002 में 29.6 प्रतिशत हो गई थी। रिजर्व बैंक के ताजे अध्ययन से प्रकट हुआ है कि देश में 1000/- रु. के बकाया वाले प्रत्येक किसान परिवार में से, 257 का स्रोत

धन-उधार देने वाले हैं। उन राज्यों को जिन्हें पर्याप्त रूप से बैंक चलाने वाले माना जाता है (जैसे कि आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु) में भी धन-उधार देने वालों का प्रवेश सार्थक माना जाता है।

इस संबंध में, यह समझना आवश्यक है कि व्यष्टि-वित्त (माइक्रोफाइनान्स) संस्थान इतने सफल क्यों हैं? वे जरूरत मंदों को छोटे ऋण देते हैं, लोग बिना किसी मुसीबत के इन ऋणों तक पहुंच सकते हैं, समर्थक प्रतिभूति भी नहीं मांगी जाती है। इन लोगों की आलोचना इसलिए की जाती है कि अधिक ब्याज लेते हैं। किंतु तथ्य यह है कि उनकी लागत को बचाने की जरूरत है और राष्ट्रीयकृत बैंकों की भांति बड़े पैमाने पर परिचालित कर सकने योग्य नहीं हैं। अंत में, तथापि, यह केवल बैंकों और व्यष्टि वित्त संस्थानों के बीच एक सहयोग होगा जो अन्ततोगत्वा किसानों की जरूरतें पूरी करने में सहायता करेगा। हाल ही में व्यापार सुविधादाता और संवाद दाता प्रतिमान के लिए दिशा निर्देश जारी किए गए हैं और ऐसे प्रतिमानों को अंगीकार करने और बढ़ाने की जरूरत है। पिछले 4 वर्षों में विकास क्षेत्र में अपने कार्यकरण के दौरान मैंने महसूस किया है कि सरकारी एजेंसियां स्वैच्छिक एजेंसियों/गैर सरकारी संगठनों के साथ काम करना नहीं चाहती हैं क्योंकि उनमें से अधिकतर को धोखेबाज समझा जाता है जो वहां केवल धन हड़पने के लिए होती हैं जो वास्तव में हमेशा सत्य नहीं होता है। ऐसी स्वैच्छिक एजेंसियों में ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने काफी त्याग किया है और वे देश के लिए अपना कार्य कर रहे हैं। गैर सरकारी संगठनों का मानना है कि सरकारी एजेंसियां नौकरशाही और राजनैतिक भ्रष्टाचार से दुखी हैं और सरकारी एजेंसियों के साथ नहीं बल्कि विदेशी दानदाताओं के साथ काम करना बेहतर होता है। किंतु वे यह समझने में विफल रहते हैं कि उन्हें सरकारी एजेंसियों के बिना पहुंच/पैमाना नहीं मिलेगा। अत: दानों ओर की की प्रवृत्तियों में परिवर्तन आवश्यक है अन्यथा स्वाधीनता के 60 वर्ष बाद भी हमें विकास के सूचकांक में 126वां स्थान मिलेगा (2006 में हमारा यही स्थान था)।

प्रकृति

–विनिता कुमारी
पत्नी श्री योगेन्द्र सिंह, उपप्रबंधक

प्रकृति है जीवन का आधार,
प्रकृति से न करो खिलवाड़।

प्रकृति का करके संहार
तुम हो जाओगे बर्बाद,
इसकी ताकत से टकराकर
तुम खुद खा जाओगे मात।

पर्वत हो या वृक्ष अपार
नदियां हैं हिम की सौगात,
नहीं करो तुम इनका नाश
इनमें है प्रकृति का वास।

पशु-पक्षी या हो इंसान
प्रकृति में ही बसते प्राण,
मानव तू ऐसा नादान
नहीं हुई इसकी पहचान।

वृक्ष तुम्हारी खातिर अपना
रग-रग कर देते हैं दान,
तू भी तो कुछ देना सीख
लेना ही क्या तेरा काम।

प्रकृति है जीवन आधार
प्रकृति से न करो खिलवाड़।।

भारत के प्रदेश राजस्थान

पस्तुति : रंजन कुमार
प्रबंधक

इतिहास

राजस्थान में पुरातात्विक और ऐतिहासिक प्रमाण 100,000 वर्षों पूर्व का निरन्तर मानव पर्यावास दर्शाता है। 7वीं और 11वीं शताब्दी के बीच राजवंशों का उदय हुआ जिसमें 16वीं शताब्दी के प्रारम्भ में राजपूतों की शक्ति अपनी चर्मावस्था में थी। सम्राट अकबर ने राजपूतों ने अंग्रेज़ों के साथ गठबंधन कर लिया था

मुगलों के पतन के साथ ही राजपूतों ने अपनी शानदार विजय से धीरे-धीरे अपनी स्वाधीनता फिर से प्राप्त कर ली थी, किन्तु उनकी गिनी-चुनी शक्ति अंग्रेज़ों के साथ उभरने लगी थी। अधिकांश राजपूतों ने अंग्रेज़ों के साथ गठबंधन कर लिया था जिन्होंने उन्हें प्रत्येक राज्य के महाराजा के अधीन स्वतंत्र राज्य कायम करने की अनुमति दे दी थी जिसमें कुछ कतिपय राजनैतिक एवं आर्थिक बाधाएं भी थीं। यह गठबंधन अंत का प्रारम्भ सिद्ध हुआ और शीघ्र ही शासकों का असंयम और भोगविलास ही राजपूतों के साम्राज्य के पतन का कारण बना। राजस्थान राज्य का वर्तमान स्वरूप स्वतंत्रता के बाद अस्तित्व में आया।

राज्य की मुख्य भाषा राजस्थानी है जिसमें डिंगल से ली गई इंडो आर्यन समूह की बोलियां शामिल हैं जिनमें कभी चारण लोग राजाओं की विरुदावली गाया करते हैं। चार मुख्य बोलियां (पश्चिमी राजस्थान में) मारवाड़ी, जयपुरी अथवा (पूर्व और दक्षिण-पूर्ण में) ढुंढारी, (दक्षिण-पूर्व में मालवा की) मालवी और भरतपुर ज़िले की बृजभाषा है। आधुनिक शिक्षा के प्रसार के साथ राजस्थानी का प्रयोग कम होता जा रहा है और इसका स्थान राज्य की हिंदी भाषा ले रही है।

संस्कृति एवं पर्यटन

राज्य का विशिष्ट लोकनृत्य घूमर है, जिसे औरतें त्यौहारों के अवसर पर करती हैं। महिलाओं और पुरुषों का सम्मिलित गीर नृत्य और कच्ची घोड़ी (जिसमें पुरुष नृतक नकली घोड़े पर चढ़ता है) भी लोकप्रिय है। प्रसिद्ध गीत "कुरजा" है, जो किसी ऐसी स्त्री का गीत है जो अपने उस प्रति को संदेश भेजती है जो अभी तक नहीं आया है।

मार्च के अंत से और अप्रैल के प्रारम्भ तक चलने वाला वसंतोत्सव गणगौर और अगस्त के प्रारम्भ से अगस्त के अंत तक चलने वाला तीज उत्सव महत्वपूर्ण हैं। तीज उत्सव राज्य में मानसून का स्वागत करता है और झीलें भर जाती हैं। मध्य नवम्बर में पुष्कर का ऊंट और पशु मेला, जनवरी के अंत से लेकर फरवरी के प्रारम्भ तक नागौर पर्व तथा मध्य नवम्बर से लेकर नवम्बर अंत तक बीकानेर में लगने वाला मेला, आदि सभी प्रसिद्ध मेले हैं। फरवरी के प्रारम्भ से मध्य फरवरी तक चलने वाला मरु पर्व एक आधुनिक प्रसिद्ध मेला है।

पर्यटन-राज्य में अनेक पुराने एवं महलों एवं किलों को हैरीटेज **(heritage hotels)** में बदल दिया गया है।

राजस्थान में एक हिल स्टेशन भी है जो माउंटआबू के नाम से प्रसिद्ध है।

जयपुर के राजमहल, उदयपुर की झीलें एवं जैसलमेर के मरुस्थलीय किले पर्यटकों को बहुत लुभाते हैं।

राज्य में राजस्थान पर्यटकों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए सितारा और ग़ैर-सितारा श्रेणी के होटल हैं। इनके अतिरिक्त, यहां सैरगाह, रेस्तरां, कॉफी हाउस हैं जो सभी प्रकार के यात्रियों की ज़रूरतें पूरी करते हैं।

कृषि एवं भूमि संरचना

खेतीबाड़ी राज्य के लोगों का मुख्य व्यवसाय है और राज्य की आय का 22.2% इस क्षेत्र से आता है। राज्य का कुल कृषि क्षेत्र 20 मिलियन हैक्टेयर के लगभग है, इसके केवल 20% हिस्से में ही पानी देने की व्यवस्था है। इसलिए फसलों की सिंचाई के लिए जल की व्यवस्था करके राज्य की पैदावार बढ़ाई जा सकती है।

राजस्थान की मुख्य अर्थव्यवस्था कृषि आधारित है–बाजरा, गेहूं और मक्का तथा कपास उगाई जाती है। यद्यपि, राज्य के भाग अत्यधिक शुष्क हैं और रेत से ढके हैं, राज्य में कुल कृषि क्षेत्र 27,465 हज़ार हैक्टेयर है और बोया जाने वाला क्षेत्र 20,167 हज़ार हैक्टेयर है। पर्यटन भी अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण भाग है।

पश्चिम में राजस्थान सापेक्ष रूप से सूखाग्रस्त और अनौपजाऊ है। इस क्षेत्र में कुछ थार का रेगिस्तान शामिल है जिसे भारत का सबसे बड़ा रेगिस्तान कहा जाता है। रास्थान के दक्षिण–पश्चिम भाग में भूमि गीली पथरीली और अधिक उपजाऊ है। पूरे राजस्थान की जलवायु एक सी नहीं है। शीघ्र ऋतु में औसत तापमान 8 डिग्री से 28 डिग्री सेल्सियस रहता है। ग्रीष्म ऋतु में यह 25 डिग्री से 46 डिग्री सेल्सियस तक चला जाता है। औसत वर्षा भी एक जैसी नहीं होती है। पश्चिम रेगिस्तान में लगभग 100 मिलिमीटर (लगभग 4 इंच) संचित करते हैं। वार्षिक वर्षा राज्य के दक्षिण–पश्चिम भाग में 650 मिलीमीटर (26 इंच) होती है। अधिकांश वर्षा मानसून के मौसम में जुलाई से सितम्बर तक हो जाती है।

अर्थव्यवस्था एवं उद्योग

राजस्थान अपने कपड़ा उद्योग के लिए जाना जाता है और यह राज्य भारत में कते धागे का चौथा विशाल उत्पादक है। राजस्थान सीमेंट का बड़ा उत्पादक है। इसका सीमेंट उत्पादन राष्ट्रीय सीमेंट उत्पादन का 15% है।

राजस्थान भारत में दूसरा सबसे बड़ा खनिज उत्पादक राज्य है और यहां देश के कुल खनिज का 90% तक संचित रहता है।

सेवा क्षेत्र राज्य के सकल घरेलू उत्पाद के 45% तक का लेखा देता है। राज्य की अर्थव्यवस्था के अन्य स्रोत अधिरचना, परिवहन, ऊर्जा, बिजली, दूरसंचार एवं बैंककारी तथा वित्तीय संस्थान हैं।

राजस्थान का उद्योग क्षेत्र अर्थव्यवस्था में महती भूमिका अदा करता है। औद्योगिक क्षेत्र राज्य की अर्थव्यवस्था की कुल हिस्सेदारी के लगभग 32.2% का लेखा देती है। राजस्थान के प्रमुख उद्योगों में वस्त्र, कालीन, ऊनी वस्त्र, सब्ज़ियां, तेल और रंग उद्योग शामिल हैं। भारी उद्योगों में तांबे और जस्ते को गलाना तथा रेलवे के रोलिंग स्टॉक का निर्माण करना शामिल है। निजी क्षेत्र से संबंधित अन्य उद्योगों में इस्पात, सीमेंट, चीनी मिट्टी और कांच का सामान, इलैक्ट्रानिक, चमड़े का सामान और जूते तथा पत्थर एवं अन्य रासायनिक उद्योग आते हैं। राजस्थान उप महाद्वीप के उत्तर–पश्चिमी भाग में फैला है। पश्चिम में और उत्तर-पश्चिम में यह पाकिस्तान से और उत्तर तथा उत्तर–पूर्व में पंजाब तथा उत्तर प्रदेश के राज्यों से से, पूर्व में और दक्षिण–पूर्व में उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश से तथा दक्षिण–पश्चिम में गुजरात राज्य से घिरा हुआ है। राज्य का क्षेत्रफल 142,140 वर्ग मील (342,239 वर्ग किलोमीटर) है। जयपुर राजस्थान की राजधानी है।

मुख्यतः एक कृषि और चरागाह आधारित अर्थव्यवस्था वाले राजस्थान में खनिज पदार्थों के अच्छे संसाधन हैं। राजस्थान जस्ते के घोल, तामड़ा, इसके जिपसन के 94%, कच्ची चांदी के 76%, एसबेस्टॉस के 84%, फेल्सपर के 68% और माइका के 12% सम्पूर्ण उत्पादन का लेखा देता है। साम्भर में और अन्यत्र भी नमक के भारी भंडार तथा खेतड़ी एवं दरीबा में तांबे की खान हैं। सफेद मार्बल की खान जोधपुर के निकट मरकाना में है। मुख्य कार्यों में, कपड़ा, कालीन और ऊनी वस्त्रों का निर्माण तथा वनस्पति है। भारी उद्योग में रेलवे रोलिंग स्टॉक का निर्माण, तांबे तथा जस्ते का प्रगलन शामिल है। रासायनिक कास्टिक सोड़ा, कैल्शियम, कार्बाइड, तेज़ाब, उर्वरक, जीवमारक और कीटनाशकों का भी उत्पादन करता है। प्रमुख औद्योगिक परिसर जयपुर, कोटा, उदयपुर और भीलवाड़ा में हैं।

बिजली की आपूर्ति पड़ौसी राज्यों से और चम्बल घाटी परियोजना से की जाती है। कोटा के निकट रावतभाटा में अणु ऊर्जा संस्थान है। राजस्थान रेल, वायु मार्ग और सड़कों से जुड़ा है। मार्च, 1999 में सड़कों की कुल लम्बाई 77,347 किलोमीटर थी। जोधपुर, बीकानेर, कोटा, सवाई माधोपुर और भरतपुर राज्य में रेलवे जंक्शन हैं। नियमित विमान सेवा जयपुर, जोधपुर और उदयपुर, दिल्ली एवं मुम्बई से जोड़ती हैं।

कविता और हम

–राकेश कुमार
वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय

कविता हृदय की वस्तु है और आज भी वस्तुवादी समाज में एक 'अदद वस्तु' के रूप में स्थापित हो पाने में असमर्थ है। भौतिकवादी आवश्यकताओं के अनुरूप व्यापारिक भाषा को भी आज काव्यात्मक रूप प्रदान कर दिया गया है। यह इसी कविता की देन है। स्वाभाविक है कि काव्यात्मक वाणिज्यिक भाषा की छाप का असर दीर्घकालिक होता है। यानि कविता अब परिष्कृत और बदले रूप में हमारे समक्ष है और हम इसे सहर्ष इसी रूप में स्वीकार भी कर रहे हैं। कवि धूमिल ने लिखा था–

"कविता क्या है?
क्या वह व्यक्तित्व बनाने की,
चरित्र चमकाने की,
खाने–कमाने की कोई चीज है?
ना भई ना
कविता भाषा में आदमी होने की तमीज है।"

वस्तुत: कविता आदमी को, आदमियत की ओर मोड़ने का कार्य करती है। कविता, परत–दर–परत आदमी गैर–आदमियत को अनावृत करती है। दूसरे शब्दों में कविता आदमी को दुनियादार होने से बचाती है। कविता से जुड़ा आदमी, शब्दों की दुनिया में पहुंचकर अलौकिक हो जाता है और यही अलौकिकता इस आधुनिक दुनिया में आदमी होने की तमीज़ की पहचान कराती है।

यह कटु सत्य है कि हमारी संस्कृति की पहचान हमारी अपनी राजभाषा हिन्दी आज हाशिए पर पटक दी गई है। ऐसे में कविता की तो बात ही छोड़िए। आधुनिक युग की भाग–दौड़ और रेलम–पेल में कविता का व्यक्तित्व बौना हो गया है। कविता के लिए की गई प्रत्येक पुकार प्रतिध्वनि बनकर वापस अपने ही कानों से आकर टकराती है। अब आने वाली प्रत्येक अजानी सुबहें कविता का संदेश लेकर नहीं आती और न ही ढलती उदासीन शामें काव्यात्मक लोरियां सुनाती हैं।

यह बात हमेशा से ही कही जाती रही है कि हिन्दी जो हमारी अपनी भाषा है, किसी पर लादी नहीं जाएगी। इसका परिणाम यह हुआ कि हिन्दी अभी तक आ नहीं पाई है लेकिन जो अंग्रेजी वर्षों से लदी हुई है इसका क्या?इसकी चिन्ता संभवत: किसी को नहीं है क्योंकि अंग्रेजी किसी को भी लदी हुई प्रतीत नहीं होती। अंग्रेजी को हमने सहज रूप में स्वीकार भी कर लिया है।

आज वैश्वीकरण के युग में काव्यात्मक हिन्दी की महत्ता और आवश्यकता अमेरिकी और विदेशी बहु–देशीय कंपनियों को समझ में आ रही है। इसीलिए उनके व्यवसाय के संवर्धन में हिन्दी एक महत्वपूर्ण स्थान पर पहुंचकर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। काव्यात्मक भाषा में दिए गए उनके स्लोगन न सिर्फ उनके व्यवसाय को बढ़ा रहे हैं बल्कि जनता को भी खूब लुभा रहे हैं।

जहां तक लेखन कर्म और रचनाधर्मिता का प्रश्न है, अंग्रेजी के लेखक और पाठक दोनों ही तथाकथित रूप से विशिष्ट वर्ग के लोग हैं जबकि हिन्दी के लेखक और पाठक अभी भी आम वर्ग के लोग माने जाने जाते हैं। यही नहीं अंग्रेजी की पुस्तकों की कीमत हिन्दी के मुकाबले कई गुना अधिक होती है और प्रकाशक भी रायल्टी देते समय दोनों भाषाओं की पुस्तकों की राशि स्वत: ही निर्धारित कर लेता है, जो जाहिर है, अंग्रेजी पुस्तकों के लिए ज्यादा ही होगी। हिन्दी का लेखक दीन–हीन, निरीह प्राणी बनकर जीता है तथा अक्सर विश्वविद्यालयों के कोरीडोर तथा कॉफी

हाऊस में चर्चा करते नजर आता है। संभवत: यह उसकी वैचारिक भूमि है जिस पर बैठकर वह चर्चा करता है और लेखक-कर्म के लिए आवश्यक ऊर्जा और सामग्री जुटाता है। अंग्रेजी का लेखक यह ऊर्जा पंचतारा परिवेश तथा धनाढ्‌य वर्ग की कॉकटेल पार्टियों से प्राप्त करता है।

वैश्विक आर्थिक परिदृष्य में तेजी से हो रहे बदलाव तथा आम आदमी की उपभोक्तावादी मानसिकता के बीच में आज भी कविता कहीं बहुत गहरे तक जिंदा है। वर्तमान संदर्भ में मुझे यें पंक्तियां बार-बार याद आ रही हैं जो पहले भी पूर्णत: प्रासंगिक थी और आज भी पूर्णत: प्रासंगि हैं:-

"यह सच है कि तुम कविता से
रोटी नहीं कमा पाओगे।
लेकिन यदि कविता लिखोगे, पढ़ोगे
या सुनोगे
तो रोटी सलीके से खाओगे।"

कविता जीवन की नकारात्मकता के विरुद्ध अपने आपको स्थापित करने की कवायद में रत है। जिस मनुष्य को वर्तमान व्यवस्था ने कुरुप बना दिया है उसी मनुष्य के सुख-दुख को कविता मुखर बनाने का प्रयास करती है, उसे उसका सुन्दर चेहरा वापस करना चाहती है। आज की कविता में वर्तमान भारतीय समाज तथा उसमें संघर्षरत करोड़ों लोगों की जिजीविषा के असंख्य रूप विद्यमान हैं। इन्हीं रूपों को समाज के सामने उनके सुन्दरतम स्वरूप में सामने लाने का महती कार्य करती है कविता।

जीवित रहने की लड़ाई में आदमी के लिए क्या आवश्यक है?सांसारिक विलास की वस्तुएं या साहित्य अर्थात् कविता जो उसे दुनियादार तो नहीं बनाती लेकिन मानसिक धरातल पर दुनिया में जीने का एक आधार अवश्य प्रदान करती है। जब आवश्यकता की बात होती है तो गेहूं और गुलाब की लड़ाई में जीत किसी की नहीं होती। गेहूं शरीर के लिए जरूरी है तो गुलाब मस्तिष्क के लिए। एक तन की भूख मिटाता है तो दूसरा मन की। मनुष्य के लिए दोनों की आवश्यकताएं बराबर हैं लेकिन दोनों के अस्तित्व की लड़ाई चल रही है। वस्तुत: कविता, समस्त अंतर्विरोधों के बीच जी रहे एक आम आदमी की जिजीविषा का प्रतीक है जिसे अभी एक लंबी यात्रा तय करनी है।

यह तो सर्वविदित ही है कि जो भाषा रोजगार दिलाती है उसकी ओर लोगों का भागना स्वाभाविक है और मजबूरी भी। अंग्रेजी की वर्तमान स्थिति इसी का परिणाम है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि विश्व बाजार में भारत स्थिति इसी का परिणाम है। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि विश्व बाजार में भारत आज एक बड़े बाजार के रूप में उभरा है और यहां की अधिकतर जनता को अंग्रेजी नहीं आती। अत: इस दृष्टी से हिन्दी भाषा तथा इसके प्रयोग की अपार संभावनाएं हैं। यही हिन्दी अब साहित्य, कविता, कहानी की दुनिया से आगे निकलकर अब मीडिया तथा विज्ञापन तक आ गई है। यह हिन्दी का बदला हुआ रूप है। हिन्दी के इसी रूप को हमें स्वीकारना होगा, जिसमें कविता भी शामिल है।

यह एक कटु सत्य है कि आज आम आदमी की स्थिति, उसके दुख, उसकी सामाजिक, आर्थिक दशा पर तो कविताएं लिखी जा रही हैं जो उसके जीवन से बहुत गहरे जुड़ी हैं, परन्तु वह उस आम आदमी तक नहीं पहुंच पा रहीं हैं या उस आदमी का कोई भला नहीं कर पा रही हैं। यह भी सत्य है कि कविता लिखने से समाज नहीं बदल सकता लेकिन उतना ही बड़ा सत्य यह भी है कि कविता समाज बदलने वालों की सोच बदल सकती है, उन्हें मस्तिष्क के अलावा हृदय से सोचने पर मजबूर कर सकती है। यही कविता का उद्देश्य भी होता है और इस उद्देश्य के आलोक में देखें तो कविता आज भी सफल है और आगे भी रहेगी।

यज्ञ की महिमा

–एस.डी.शर्मा

लेखा अधिकारी (सेवानिवृत)

यज्ञ शब्द का अर्थ है, देव-पूजा, संगतिकरण और दान। सर्व प्रथम होम अर्थात् हवन के माध्यम से सोम, इन्द्र, वरुण, सूर्य, अग्नि, पृथ्वी आदि देवताओं को हवि दी जाती है। हवि दूसरे अर्थ में आहुति भी कहलाती है। वेद मंत्रों के द्वारा इन जड़ देवताओं की पूजा की जाती है जो हमें जल, अन्न, प्रकाश, तेज, शीतलता आदि प्रदान करते हैं। जो घी, सामग्री की आहुति हम अग्नि में डालते हैं वह अग्नि के द्वारा, कई गुणा होकर वायु मंडल में फैलकर रोग के कीटाणुओं को नष्ट करके वायु मंडल को शुद्ध करती है।

यज्ञ से द्वारा वर्षा भी होती है। आक्सीजन की वृद्धि होती है। परमाणु सूक्ष्म रूप में वायुमंडल में फैलकर शुद्ध वायु उत्पन्न करते हैं। यज्ञ का सबसे बड़ा गुण है कि यह वायु मंडल में सुगंधी फैलाकर रोग के कीटाणुओं को नष्ट करता है इसीलिए वेद में कहा गया है "यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म:" अर्थात् यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है। दूसरे स्थान पर लिखा है 'यज्ञ अस्य भुवनस्य नाभि:' यज्ञ इस संसार का अर्थात् लोक का केन्द्र विन्दु है एवं यज्ञ इस पृथ्वी की नाभि है।

दूसरा भाग संगतिकरण अर्थात् मेल है, यज्ञ हमें जोड़ता है। साथ मिलकर बैठते हैं, यज्ञ करते हैं तो आपसी वैमनस्य दूर होकर पारस्परिक प्रेम उत्पन्न होता है। यज्ञ में चारों तरफ चार यज्ञमान बैठते हैं। उनके ऊपर ऊंचे आसन पर यज्ञ के ब्रह्मा बैठते हैं। जिन्हें यज्ञ की पूर्णाहुति के समय आहुति डालने का अवसर दिया जाता है। बड़े-बड़े यज्ञों में सैकड़ों की संख्या में लोग एकत्रित हो जाते हैं। अर्थात् यज्ञ के माध्यम से आपसी मेल-जोल बढ़ता है जिसे संगतिकरण कहते हैं।

यज्ञ का तीसरा चरण है दान। यज्ञ के उपरांत जब तक दान न किया जाये, यज्ञ अधूरा है। यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् सबसे प्रथम हम यज्ञ के ब्रह्मा यानि आचार्य जिसने यज्ञ पूर्ण कराया है, उन्हें दान-दक्षिणा देते हैं। यदि बड़ा यज्ञ है जो सभी वेदपाठियों को दक्षिणा दी जाती है। अन्यथा छोटे यज्ञ में केवल ब्रह्मा जी को दक्षिणा देते हैं। इसके पश्चात् गौ माता के लिए प्रसाद निकालते हैं पहले प्रसाद की अग्नि में हवि देते हैं। तब गाय के लिए निकालते हैं। इसके पश्चात् मंदिर, गौशाला, गुरुकुल एवं अनाथालय आदि के लिए दान देते हैं। यह यज्ञ का सबसे महत्वपूर्ण अंग है।

प्राचीन काल में राजा लोग दो प्रकार के यज्ञ किया करते थे, एक राजसूय यज्ञ, जो अपने राज्य का यश बढ़ाने के लिए, समृद्धि के लिए होता था। इसमें सभी पड़ोसी राजाओं को भी आमंत्रित करते थे। इसका उद्देश्य अपने राज्य में खुशहाली और सुख, ऐश्वर्य की वृद्धि होता था। दूसरा अश्वमेघ यज्ञ राजा लोग अपनी वीरता का प्रदर्शन के लिए किया करते थे। जो राजा अश्व पकड़ लेता था उसी के साथ युद्ध होता था। जो राजा विजयी होता था वह हारे हुए राजा के राज्य पर कब्जा कर लेता था। इस प्रकार राजाओं में दोनों प्रकार के यज्ञ करने की परम्परा थी। जो अब नष्ट हो चुकी है। क्योंकि अब राजा ही नहीं रहे।

हमारे शास्त्रों में पञ्चमहायज्ञ का विधान किया गया है। (1) ब्रह्म यज्ञ (2) देव यज्ञ (3) पितृ यज्ञ (4) अतिथि-यज्ञ (5) बलिवैश्व देव यज्ञ। ब्रह्म-यज्ञ में दोनों समय प्रात: सायं संध्या अर्थात् संधि-काल में प्रभु की उपासना का विधान किया गया है। संध्या के कुछ मंत्र निश्चित है उनके द्वारा दोनों समय प्रभु की स्तुति, प्रार्थना, उपासना करनी चाहिए। स्तुति से प्रभु के गुणों का जीवन में समावेश, प्रार्थना से निर्भयता, अहंकार का नाश, एवं उपासना से प्रभु का सामीप्य अर्थात् निकटता प्राप्त होती है। दूसरा यज्ञ देव-यज्ञ अर्थात् होम (हवन) के द्वारा प्रभु की उपासना एवं देवताओं को हवि की जाती है जो हम पर सुख की वर्षा करते हैं। तीसरा पितृ-यज्ञ, अपने माता, पिता और बड़े बुजुर्गों की भोजन, वस्त्र आदि से सेवा करना, संतुष्ट तर्पण करना उनकी आज्ञा-पालन करना, उन्हें कष्ट, संताप न देना, उनका पर्याप्त सम्मान, सेवा करना ही पितृ-यज्ञ है। चौथा अतिथि-यज्ञ है अर्थात् बिना निश्चित तिथि के जिसके आगमन की कोई तिथि निश्चित न हो अनायास ही कोई विद्वान जो अपने घर आ जाये उसकी भोजन आदि से सेवा करना, संतुष्ट करना अतिथि-यज्ञ कहलाता है। पांचवा अंतिम बलि वैश्वदेव यज्ञ है। जाने-अनजाने में हमसे कुछ जीवों की हत्या हो जाती है उसका भी पाप लगता है। उस पाप के बदले हमें कुछ पुण्य कर्म करना चाहिए वह यह कि जो भोजन अपने लिए बनाते हैं उसमें से कुछ भाग पक्षियों, कीट, पतंगों के लिए निकालना चाहिए और उन्हें खिलाना चाहिए। बस यही वलिवैश्व देव-यज्ञ कहलाता है। इस प्रकार पंञ्चमहायज्ञों को जीवन में धारण करके, उनपर आचरण करके हम आदर्श एवं सात्विक जीवन बना सकते हैं।

काव्य सुधा

'सलौना स्वप्न'

–सौरभ सिंह
सहायक प्रबंधक

स्वप्न सलौना इक देखा है,
मॉं का आँचल पिता का साया
भाई बहन से सौहार्द हमेशा
मित्रों का भी साथ रहेगा।

गौरव मुझसे जड़ मूल का
मुझ ही से हो धन की वर्षा
आँख का तारा रहूँ हमेशा
सब का प्यारा रहूँ हमेशा।

हे परम परमेश्वर शक्ति देना
अपने चरणों की भक्ति देना
दुख सब उनके मेरे जीवन में
सुख मेरा सब उनको देना।

बड़ों का आशीष रहे हमेशा
मेरी जननी को मान हमेशा
कर्म करूं ऐसे जीवन में
देश को हो अभिमान हमेशा।

सुसंगत मैं रहूं हमेशा
दुष्कल्पना से परे हमेशा
हृदय प्रफुल्लित जीवन पर्यन्त
इतनी अनुकम्पा रहे हमेशा।

बस इतना मागूं मैं ईश्वर
स्वप्न सलौना यही है मेरा।

दहकती आग!

–वर्षा रघु
पुत्री वी. रघु, पूर्व महाप्रबंधक

इतना दु:ख मैं सह नहीं पाऊँगी
अगर सहना पड़ा तो मैं क्या करूँगी?
अब सह रही हूँ मैं वह दु:ख,
भूल गई मैं प्यास और भूख।

रात है, अंधेरा है,
रोशनी बहुत कम है,
कोई साधन नहीं, सिर्फ लकड़ियाँ,
आग रहती है जहाँ।

हा! क्या अनुभव है,
प्रकृति सब कुछ सिखाती है,
छोटी-छोटी लकड़ियाँ आग बनती है
वह आग अंधेरे को मिटाती है।

दहकती आग रोशनी देती है,
जीवन को उजला बनाती है,
दहकती आग देती है एक आत्मविश्वास
जलते रहना और कभी नहीं मानना हार।

आज दहकती आग ने मेरा दु:ख दूर किया
मैंने इस रमणीय प्रकृति से पाया संदेश।

राष्ट्रीय आवास बैंक के राजभाषा नीति कार्यान्वयन के क्षेत्र में बढ़ते कदम

राष्ट्रीय आवास बैंक अपने स्थापना काल से ही भारत सरकार की राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन एवं इसके प्रवाभी अनुपालन के लिए कटिबद्ध रहा है ।

इस वर्ष भी बैंक में 16 अगस्त, 2007 से 14 सितंबर, 2007 तक "हिंदी चेतना मास" का आयोजन किया गया है। इस दौरान 6 प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं तथा "हास्य व्यंग्य एवं समाज" पर एक हिंदी वृत्तचित्र/फिल्म का प्रदर्शन भी किया गया। इसके अतिरिक्त, "आंतरिक कामकाज में हिंदी" विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया।

मुख्य पुरस्कार वितरण समारोह में मशहूर हास्य कवियत्री डा. सरोजिनी प्रीतम मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं एवं उन्होंने अपनी कविताओं एवं उद्‌बोधन से सभी का मन मोह लिया। बैंक में पिछले कुछ वर्षों में तेजी से बढ़े हिंदी कार्यकलापों की बैंक के अध्यक्ष श्री एस. श्रीधर एवं कार्यपालक निदेशक श्री सुरेन्द्र कुमार ने मुख्य समारोह में भूरि भूरि प्रशंसा की एवं विजयी प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया।

हिंदी चेतना मास के पुरस्कार वितरण समारोह में दिए गए पुरस्कारों का ब्यौरा

1. हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता

क्रम सं.	अधिकारी का नाम व पदनाम	पुरस्कार
1.	सुश्री राधिका राठी, सहायक प्रबंधक	प्रथम
2.	सुश्री युविका सुम्बली, सहायक प्रबंधक	द्वितीय
3.	श्री आर. के. अरविंद, उप प्रबंधक	प्रोत्साहन पुरस्कार

2. हिंदी नोटिंग व ड्राफटिंग प्रतियोगिता

1.	सुश्री निधि एस नागेन्द्र, सहायक प्रबंधक	प्रथम
2.	श्री पी. के. अग्रवाल, सहायक महाप्रबंधक	द्वितीय
3.	श्री जयप्रकाश, सहायक प्रबंधक	प्रोत्साहन पुरस्कार

3. हिंदी समाचार पत्र वाचन प्रतियोगिता

1.	श्री विशाल गोयल, क्षेत्रीय प्रबंधक	प्रथम
2	श्री विनीत सिंघल, प्रबंधक	द्वितीय
3	श्री परिचय, सहायक प्रबंधक	प्रोत्साहन

4. हिंदी पत्र लेखन प्रतियोगिता (अहिंदीभाषी अधिकारियों के लिए)

1.	एम अनुराधा, उप प्रबंधक	प्रथम
2.	सचिन जठार, उप प्रबंधक	द्वितीय
3.	रानु गांगुली, प्रोत्साहन	उप प्रबंधक

5. हिंदी सुलेख प्रतियोगिता (अहिंदीभाषी अधिकारियों के लिए)

1.	श्री एन उदय कुमार, सहायक महाप्रबंधक	प्रथम
2.	श्रीमती रीता भट्टाचार्य, प्रबंधक	द्वितीय
3.	श्रीमती एस उषा रानी, प्रबंधक	प्रोत्साहन

6. हिंदी पत्र लेखन प्रतियोगिता (उच्च अधिकारियों के लिए)

1	श्री राज विकास वर्मा, कार्यपालक निदेशक	प्रथम
2	श्री राधेश्याम गर्ग, महाप्रबंधक	द्वितीय
3	श्री के. मुरलीधरन, उप महाप्रबंधक व श्री राकेश भल्ला, महाप्रबंधक- सयुक्त रूप से	प्रोत्साहन

हिंदी पत्रिका - आवास भारती में सर्वश्रेष्ठ लेख/काव्य को पुरस्कार

1 सामान्य लेख श्रेणी में-श्री वी. के. बादामी, उप महाप्रबंधक
2 तकनीकी लेख श्रेणी में -श्री पीयूष पांडेय, उप प्रबंधक
3 श्रेष्ठ काव्य श्रेणी में-श्रीमती विनीता पत्नी श्री योगेन्द्र सिंह, उप प्रबंधक

हिंदी प्रोत्साहन योजना के तहत साल भर सर्वश्रेष्ठ कार्य हिंदी में करने के लिए पुरस्कार

1. सुश्री पूनम चौरसिया, प्रबंधक - प्रथम
2. श्री जी. एन. सोमदेवे, प्रबंधक-द्वितीय

राजभाषा चल वैजयंती
प्रशासन विभाग

राष्ट्रीय आवास बैंक परिवार समाचार

विश्व पर्यावास दिवस-पुरस्कार वितरण

विश्व पर्यावास दिवस 2006 के समारोह के एक भाग के रूप में, राष्ट्रीय आवास बैंक ने विश्व पर्यावास दिवस के विषय "नगर-आशा की किरण" को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित विषयों पर एक निबंध प्रतियोगिता आयोजित की:-

क. हरित एवं सक्षम शहरी भवन और अधिरचना

ख. शहरी भूमि का सफल उपयोग

ग. शहरी ग़रीब के लिए भूधृति

पुरस्कार विजेतागण

प्रथम पुरस्कार - श्री अशोक कुमार, भारतीय रिज़र्व बैंक, मुम्बई

द्वितीय पुरस्कार - श्री मनोज वसंत देवधर, हडको, देहरादून

तृतीय पुरस्कार (संयुक्त रूप से) - श्री संतोष पटनायक, यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया, कटक

डॉ. तपन कुमार प्रधान, भारतीय रिज़र्व बैंक, नवी मुम्बई

सांत्वना पुरस्कार (तीन)

1. डॉ. दलसिंगार यादव, भारतीय रिज़र्व बैंक, मुम्बई
2. सुश्री सिमरनदीप तनेजा, हडको, नई दिल्ली
3. श्री टी. पी. गोपीनाथ, भारतीय रिज़र्व बैंक, मुम्बई

सभी विजेताओं को 13 अक्तूबर 2007 को आयोजित एक समारोह में पुरस्कार प्रदान किए गए।

आवास वित्त कंपनियों के मुख्य कार्यपालकों के साथ बैठक

नई दिल्ली में 31 जुलाई, 2007 को आवास वित्त कंपनियों के मुख्य कार्यपालक अधिकारियों की 24वीं बैठक आयोजित की गई थी। इस बैठक में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे। इस बैठक के दौरान पारस्परिक हित के विषयों पर विचार-विमर्श किया गया था। बैठक की अध्यक्षता राष्ट्रीय आवास बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री एस. श्रीधर ने की थी।

प्रत्यावर्त (रिवर्स) बंधक ऋण से संबंधित विषय: अद्यतन बंधक गारंटी कंपनियों के परिचालन पर दिशा-निर्देश, आवास/भूसम्पदा क्षेत्र के लिए अनुसंधान अध्ययन, आवास वित्त बाज़ार में धोखाधड़ीपूर्ण लेनदेन, राष्ट्रीय आवास बैंक का आवास मूल्य सूचकांक, सभी के लिए सामर्थ्ययोग्य आवास-बैंकों और आवास वित्त कंपनियों द्वारा प्रदत्त आवास वित्त की स्थिति, शहरी ग़रीबों को बसाने के लिए आवास हेतु आर्थिक सहायता प्राप्त ब्याज, उपभोक्ता संरक्षण और शिक्षा के संवर्धन के लिए राष्ट्रीय आवास बैक की ओर से की गई पहल की पुनरीक्षण समिति, आदि विषयों पर विचार-विमर्श किया गया था। इसके अतिरिक्त, स्वर्ण जयंती ग्रामीण वित्त योजना के अधीन वर्ष 2007-08 के लिए लक्ष्य नियत करने के अतिरिक्त, इस योजना के अधीन संस्थानों के निष्पादन के क्रियान्वयन करने के पुनरीक्षण को भी अंतिम रूप दिया गया।

नियुक्ति

बैंक में निम्न अधिकारियों ने कार्य ग्रहण किया-

1. के. चक्रवर्ती, सहायक महाप्रबंधक
2. सौरभ शील, क्षेत्रीय प्रबंधक
3. आर. के अरविंद, उप प्रबंधक
4. लता रस्तोगी, सहायक प्रबंधक
5. अजय कुमार, सहायक प्रबंधक
6. आशीष जैन, सहायक प्रबंधक
7. परिचय, सहायक प्रबंधक
8. आदित्य, सौरभ, सहायक प्रबंधक
9. युविका सुम्बली, सहायक प्रबंधक
10. सोनिया भल्ला, सहायक प्रबंधक
11. सौरभ सिंह, सहायक प्रबंधक

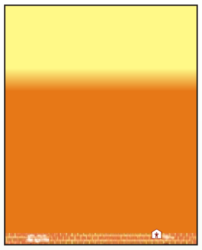

आपकी पाती

दिनांक : 25.08.2007

विषय : 'आवास भारती' के अप्रैल-जून, 2007 अंक की प्राप्ति

आपके कार्यालय की उपरोक्त विषयक पत्रिका की एक प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ आवास वित्त एवं सम-सामयिक विषयों पर आधारित सभी लेख पठनीय हैं।

राधेश्याम गर्ग जी की रचना 'आवासीय गतिविधियाँ और आयकर कानून' पढ़कर बहुत अच्छी लगी। अन्य सभी रचनाएँ सराहनीय हैं। पत्रिका की भाषा-शैली सरल एवं सरस है। पत्रिका का कलेवर व साज-सज्जा उत्कृष्ट है। संपादकीय सम-सामयिक होने होने के साथ-साथ विचारणीय भी है। मैं कामना करता हूँ कि पत्रिका में दिन-प्रतिदिन और रचनात्मक निखार आए। इसी मंगल कामना के साथ संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई एवं आगामी अंक हेतु शुभकामनाएँ।

(डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल)
मुख्य प्रबंधक
कार्पोरेशन बैंक, मगंलूक

दिनांक 25-8-2007

आपके संस्थान द्वारा प्रकाशित एवं आपके द्वारा प्रेषित पत्रिका **आवास भारती** हमें प्राप्त हुई है। पत्रिका का कलेवर मनोहर है। प्रकाशित सामग्री स्तरीय, मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक है। संस्थान के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री एस. श्रीधर का साक्षात्कर उपयोगी है। आशा है, इसी तरह शीर्ष कार्यपालकों के साक्षात्कारों का प्रकाशन आपकी पत्रिका में एक स्थायी स्तंभ के रूप में किया जाता रहेगा। **आवासीय गतिविधियाँ और आयकर कानून** एवं **बासल-II फ्रेमवर्क** शोधपरक एवं ज्ञानवर्धक निबंध हैं, जो पत्रिका को संग्रहणीय बनाते हैं। **मानव बंदोबस्ती पर वैश्वीकरण का नकारात्मक प्रभाव** निबंध में श्री रंजन कुमार ने गंभीर विमर्श की शुरूआत की है। **भूकम्पीय क्षेत्रों में मकान : कुछ समाधान** के समाधान व्यवहारिक हैं। **भारत के प्रदेश भी एक सूचनाप्रद स्तंभ हैं।**

आवास भारती निश्चय ही राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सहायक एवं सक्षम पत्रिका है। इसके प्रकाशन के लिए हमारी बधाई स्वीकार करें।

पत्रिका हमें प्रेषित करने के लिए धन्यवाद। हमारा बैंक भी त्रैमासिक पत्रिका "यूको टॉवर" का प्रकाशन करता है। पत्रिका का ताजा अंक संलग्न है। भविष्य में भी यह पत्रिका आपको मिलती रहेगी।

मुख्य अधिकारी
(कार्यनीति आयोजना-राजभाषा)
यूको बैंक, कोलकाता

दिनांक 11.9.07

आपकी पत्रिका आवास भारती - अंक 23 प्राप्त हुआ धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख प्रशंसा के पात्र हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं कलेवर भी आकर्षक है।

आशा है कि भविष्य में भी पत्रिका के अंक हमें नियमित रूप से प्राप्त होते रहेंगे।

शुभकामनाओं के साथ

भवदीय

(पी.सी. आहुजा)
प्रबंधक (रा. भा. का.)
जल एवं विद्युत परामर्शी सेवाएं लि.,
नई दिल्ली

दिनांक 20.8.07

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका "आवास भारती" का अप्रैल से जून, 2007 का अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित लेखों में अच्छी जानकारी दी गई है। पत्रिका की साज़-सज्जा भी बहुत अच्छी है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई।

सधन्यवाद,

(अनंगपाल सिंह पंवार)
उप प्रबंधक (राजभाषा)
ओरिएंटल इंश्योरेंस कम्पनी लि., नई दिल्ली

हिन्दी चेतना मास पुरस्कार वितरण समारोह के यादगार क्षण

पंजी. सं. DELHI IN/2001/6138

राष्ट्रीय
आवास बैंक

Cover Design - Neeti Jain/Accurate Prints : 9871196002

मुद्रण तिथि : 30 अक्तूबर 2007